

Sanginee

संगिनी

Smile... Stride... Scintillate

अप्रैल-जून 2022

नालको  NALCO



संपादकिय



Editor-in-Chief

Sasmita Patra, President
NALCO Mahila Samiti

Editorial Board

Lina Mohapatra
Swayamprava Rath
Roshan Pandey

Co-ordinator

Amrita Basu

Design concept

Aswini Sutar

अप्रैल -जून 2022

प्रकाशक

नालको महिला समिति के
संयुक्त प्रयास से राजभाषा प्रकोष्ठ,
नेशनल एल्युमिनियम कंपनी लिमिटेड
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

संपूर्ण धरती पर भारत ही एक मात्र ऐसा देश है, जहां सभी छह ऋतुओं की अनुभूति होती। सभी छह ऋतुओं की अपनी एक विशेष वजह है, जो एक निर्दिष्ट अनुभूति प्रदान करती हैं। शीत ऋतु के बाद, बसंत की अनुगामी होकर ग्रीष्म ऋतु का धरती पर आगमन होता है। ग्रीष्म के ताप से जब धरती आक्रांत हुई रहती है, उसी समय सृजन के साथ मेघ का अवतरण होता है। ग्रीष्म ऋतु के साथ हमें विभिन्न पेय का आनंद प्राप्त होता है। आम जो पृथ्वी का सर्वश्रेष्ठ फल है, वह ग्रीष्म ऋतु में भारत में उपलब्ध होता है। इस दौरान शिशु से लेकर वृद्ध तक इस मौसम के आम का लुप्त उठाते हैं। ग्रीष्म ऋतु में 'पखाल' (ओड़िशा का क्षेत्रीय भोजन) जो कि गरीब का एक मात्र आहार था, आज ओड़िशा के राज्य भोज्य पदार्थ के रूप में पूरे विश्व पटल पर इसकी एक मान्यता है।

वैसे भी ओड़िया लोगों का जातीय पर्व 'रज पर्व', गांव की गलियों के झूला, पीठा, साज-गाज, रज-पान को साथ लेकर ओड़िशा के शहर के बाजार का अतिक्रमण करते हुए विश्व पटल पर अपनी सुगंध को बिखेर चुका है। यह ओड़िशा जन-जीवन की एक अद्भुत कल्पना ही है। वर्षा के आगमन से पूर्व मिट्टी की जुताई से पहले मिट्टी 'रजवती' होती है। रजवती नारी जैसे विश्राम लेती है, वैसे ही रजवती मिट्टी भी विश्राम धारण करती है। मिट्टी को कष्ट न हो इसीलिए जुताई, खुदाई, वृक्ष काटना आदि सारे काम पर विराम रखा जाता है, इस दौरान केवल विश्राम ही विश्राम का दौर होता है। वास्तविक ही है कि कृषि कार्य से पहले श्रमिक भी विश्राम ही लेता है। यह एक ऐसा पल होता है जब घर की बहु बेटियाँ वर्ष में एक बार पूरे विश्राम के साथ सज-धज कर पूरे गांव को हर्ष-उल्लास से सराबोर कर विभिन्न व्यंजन को प्रस्तुत और सेवन कर जीवन की खुशहाली का नवीन अध्याय सृजित करती हैं। कन्या के विवाह के बाद प्रथम रज का त्योहार होने पर आम, कटहल, पीठा और मीठा का टोकरी भर उपहार उसे भेजा जाता है। इस परंपरा में सौहार्द्र से रिश्ते भी मजबूत होते हैं।

जब सारी पृथ्वी ग्रीष्म से अभिभूत होती है। हम उस समय धान के खेती की शुरुआत करते हैं, रथ यात्रा का समय भी उसी पल आता है, रज पर्व और कटहल की सुगंध से सुगंधित होकर, मेघ-मल्हार के राग की आराधना करके, पृथ्वी पर वर्षा-ऋतु के आगमन का स्वागत हम करते हैं। सृजन व सृष्टि के आनंद में सभी विभोर हो उठते हैं। इसीलिए आत्मीयता के स्पर्श को अंगीकार करने के लिए सभी ऋतुओं का भारत में आगमन होता है।

सस्मिता पात्रा

ସଂପାଦକୀୟ

ପୃଥ୍ବୀପୃଷ୍ଠରେ କେବଳ ଭାରତ ଏକମାତ୍ର ଦେଶ ଯେଉଁଠି ଛଅଟିଯାକ ରତ୍ନ ଅନୁଭୂତ ହୋଇଥାଏ। ପ୍ରତ୍ୟେକ ରତ୍ନର ଏକ ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ କାରଣ ଅଛି ଏବଂ ଏକ ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ଅନୁଭୂତିର ଆନନ୍ଦ ବି ଅଛି। ଶୀତ ପରେ ପରେ ବସନ୍ତ ଦେଇ ଗ୍ରୀଷ୍ମରତ୍ନ ଧରାରେ ଅବତରଣ କରିଥାଏ। ଗ୍ରୀଷ୍ମତାପରେ ପୃଥ୍ବୀ ଯେତେବେଳେ ଆକ୍ରାନ୍ତ, ପ୍ରକୃତି ଠିକ୍ ସେତେବେଳେ ସର୍ଜନାର ମେଘ ସୃଷ୍ଟି କରିଥାଏ। ଗ୍ରୀଷ୍ମ ନଥିଲେ ବିଭିନ୍ନ ସୁସ୍ୱାଦୁ ପାନୀୟର ମଜା କ'ଣ ଆମେ ନେଇ ପାରନ୍ତେ! 'ଆମ୍ବ' ନାମକ ପୃଥ୍ବୀର ସର୍ବଶ୍ରେଷ୍ଠ ଫଳ ଗ୍ରୀଷ୍ମରତ୍ନ ହିଁ ଭାରତକୁ ପ୍ରଦାନ କରିଥାଏ। ଭାରତର ଆବାଳ-ବୃଦ୍ଧ-ବନିତା ଆମ୍ବ ସେବନର ମଜା ଉଠାଇ ଥାଆନ୍ତି ଦୁଇମାସ ଧରି। ଗ୍ରୀଷ୍ମ ରତ୍ନରେ ଯେଉଁ ପଖାଳ ଦିନେ ଗରୀବମାନଙ୍କର ଏକମାତ୍ର ଆହାର ଥିଲା, ଆଜି ଓଡ଼ିଶାର ଜାତୀୟ ଖାଦ୍ୟର ମାନ୍ୟତା ପାଇ ପୃଥ୍ବୀରେ ଏକ ଚମତ୍କାର ଖାଦ୍ୟପଦାର୍ଥର ଚମକ ସୃଷ୍ଟି କରିଛି।



ସେମିତିବି ଓଡ଼ିଆମାନଙ୍କର ଜାତୀୟ ପର୍ବ 'ରଜପର୍ବ', ଗାଆଁ ଗହଳିର ଦୋଳି, ପିଠା, ସଜବାଜ ଓ ରଜପାନରୁ ଯାଇ ଓଡ଼ିଶାର ସହର ବଜାର ଅତିକ୍ରମ କରି ବିଦେଶ ଭୂଇଁରେ ଓଡ଼ିଶା ମାଟିର ମହକ ଛୁଟାଇ ପାରିଛି। କି ଅଦଭୂତ କଳ୍ପନା ଓଡ଼ିଶା ଜନଜୀବନର! ବର୍ଷାର ଆଗମନ ପୂର୍ବରୁ ଓ ମାଟି ମାଆର କର୍ଷଣ ପୂର୍ବରୁ ମାଟି ରଜବତୀ ହୋଇଯାଏ। ରଜବତୀ ନାରୀ ଯେମିତି ବିଶ୍ରାମ ପାଇଥାଏ, ସେମିତି ରଜବତୀ ମାଟି ବିଶ୍ରାମ ନିଏ ତିନି ଦିନ। ମାଟିକୁ କଷ୍ଟ ହେଲା ଭଳି ହଳ, ମାଟି ହାଣିବା, ଗଛ କାଟିବା, ବାଟିବା ଆଦି ସବୁ କାମ ବନ୍ଦ ହୋଇଯାଏ। ଖାଲି ବିଶ୍ରାମ ହିଁ ବିଶ୍ରାମ। ଶ୍ରମିକ ବିଶ୍ରାମ ପାଏ, ତାଷ କାର୍ଯ୍ୟକୁ ଓହ୍ଲାଇବା ପୂର୍ବରୁ। ଘରର ଝିଅ ବୋହୂ ବର୍ଷକରେ ଥରେ ତମାମ ବିଶ୍ରାମ ନେଇ ସଜବାଜରେ ଗାଆଁ ଚମକାଇ ନାନାଦି ଭୋଜନ ପ୍ରସ୍ତୁତ କରି ଓ ସେବନ କରି ଜୀବକୁ ରଜମାନ କରିଦିଅନ୍ତି। ପ୍ରଥମକରି ବିବାହ କରିଥିବା ଝିଅଘରକୁ ଆମ୍ବ ପଣସ ଓ ପିଠା ମିଠା ଭାର ଯାଏ। ମିଠା ମିଠା ସଂପର୍କର ଚମତ୍କାର ବ୍ୟବସ୍ଥା।

ଯେତେବେଳେ ସାରା ପୃଥ୍ବୀ ଗ୍ରୀଷ୍ମରେ ଗ୍ରୀଷ୍ମାୟିତ, ଆମେ ସେତେବେଳେ ଅଖୁମୁଠି ଅନୁକୂଳ କରି, ରଥଯାତ୍ରା ଶୁଭାରମ୍ଭ କରି, ରଜପର୍ବ ଓ ଆମ୍ବ ପଣସର ବାମ୍ନାରେ ବାମ୍ନାୟିତ ହୋଇ, ମେଘମହାର ରାଗର ଆରାଧନା କରି, ପୃଥ୍ବୀକୁ ଆବାହନ କରିଥାଉ ବର୍ଷାରତ୍ନକୁ। ସୃଜନ ସମ୍ଭାରର ଆନନ୍ଦରେ ଆମେ ବିଭୋର ହେଇଯାଉ। ସେଥିପାଇଁ ସବୁ ରତ୍ନମାନେ ଭାରତକୁ ବୁଲି ଆସନ୍ତି କିଛି ଆତ୍ମିୟତା ସ୍ୱର୍ଣ୍ଣ ପାଇବାର ଆକର୍ଷଣରେ।

ସଂସ୍କୃତି ପାତ୍ର



जीवन के प्रति संपादक के सुविचार ...

नीति संदेश

एक बार गुरुनानक देवजी अपने शिष्य के साथ धार्मिक भ्रमण के दौरान एक गाँव पहुँचे वहाँ के लोग झगड़ालू और ईर्ष्यालु प्रवृत्ति के थे। उन्होंने गुरुजी को अपशब्द बोले और पत्थर मारकर अपमानित किया। जाते समय गुरुजी बोले टिके रहो और आबाद रहो, ऐसा कहकर दूसरे गाँव को चले गए। वहाँ के लोग परस्पर प्रेम और सद्भावना से रहते थे। उनका सदाचार देख गुरुजी उन्हें उजड़ जाओ और बिखर जाओ का आशीर्वाद देकर आगे प्रस्थान कर गए। रास्ते में उनके शिष्य ने उत्सुकता से पूछा गुरुजी जिस गाँव के लोगों ने आपको दुत्कारा आपकी कोई बात नहीं सुनी इन्हें तो आपने बसे रहो और टिके रहो का आशीर्वाद दिया। जिन्होंने आपका सत्संग सुना आपके प्रति अपना प्रेम, भाईचारा दर्शाया उन्हें आपने उजड़ जाओ, बिखर जाओ जैसे शब्द बोल दिया ऐसा क्यों?

गुरुजी बोले बुरे लोग उस गंदगी और बदबू के समान होते हैं, जो अपने संपर्क में आनेवाले को भी प्रदूषित और गंदा कर देंगे। अतः उनके एक ही जगह में सिमटे रहने से बुराई का फैलाव नहीं होगा। अच्छे लोग जहाँ भी जाएंगे, अपने विचारों और सदाचरण से ज्ञान प्रज्वलित करेंगे और मानवीय गुण फैलाएंगे। अच्छे समाज की नींव रखेंगे, इसीलिए उनका उजड़ जाना या फैल जाना ही ठीक है।

संदेश: सदगुणी व्यक्ति प्रत्येक अवस्था व स्थिति में समाज को प्रेम, सदभावना व श्रेष्ठता से प्रेरित एवं प्रोत्साहित करते हैं। समाज को सही राह की ओर अग्रसर करते हैं।

- संपादक की कलम से....

योग: प्रकृति व स्वीकृति

योग एक सम्पूर्ण विज्ञान है, साथ ही यह एक कला भी है। “करो योग रहो निरोग, योग भगाये सारे रोग”। इस संकल्प के साथ हम तनाव मुक्त रह सकते हैं। योग हमारे शरीर, मन, आत्मा को ब्रह्माण्ड के साथ जोड़ता है। योग का इतिहास काफी पुराना है। प्राचीन भारतीय दर्शन से ही यह मन और शरीर के अभ्यास के रूप में जाना जाता है। दुनिया में योग भी एक साधन है जिससे हम निरोग एवं तनाव मुक्त हो सकते हैं।



तनाव, यह डिप्रेशन एक प्रकार का मानसिक विकार है। किसी भी नकारात्मक विचार के दिमाग में हावी होने पर हमारे मानसिक स्थिति पर बुरा असर पड़ता है। आजकल हर एक मनुष्य किसी न किसी बात को लेकर तनावग्रस्त रहता ही है। भारत देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी आधे से अधिक लोग तनाव रूपी बीमारी से पीड़ित हैं।

यह सच है कि योग के निरंतर अभ्यास से हम अपने आप को तनाव मुक्त रख सकते हैं। तनाव और मानसिक अशांति में योग रामबाण की तरह काम करता है। इससे पूरे शरीर को ऊर्जा मिलती है साथ ही साथ मन भी शांत रहता है।

योग का प्रारंभ हमारे भारत देश में हुआ था। भारतीय ऋषि पतंजलि के द्वारा लिखे गए योग सूत्र में मुद्रा और आसनों का विस्तार रूप से वर्णन किया गया है।

तनाव तीन प्रकार के होते हैं

- तीव्र तनाव
- एपिसोडिक तीव्र तनाव
- पुराना तनाव

योग अभ्यास की शुरुआत हम ‘ॐ’ के उच्चारण के साथ करते हैं। इस उच्चारण का प्रभाव हमारे पूरे शरीर पर पड़ना शुरू हो जाता है। इसके उच्चारण से जो ध्वनि उत्पन्न होती है उससे हमारे शरीर के अलग-अलग भाग में कम्पन होता है, जैसे ‘उ’ से सीने, फेफड़ों, पेट पर अच्छा असर पड़ता है और जब ‘म’ बोलते हैं तो मस्तिष्क के नस नस खुलने लगते हैं। इससे हमें मानसिक शांति मिलती है। ‘ॐ’ शब्द के पवित्रता से हमारे तनाव दूर होते हैं, तनाव के कई कारण होते हैं, जैसे कुछ व्यक्तिगत समस्याओं के कारण और कुछ व्यावसायिक। संक्षेप में, यह प्रणाली तनाव प्रतिक्रिया प्रणालियों को नियंत्रित करती है। योग हृदय को

नियंत्रित करने में मदद करता है।

योग कई प्रकार के हैं जैसे हट योग, शिवानंद योग, पावर योग, अस्टांग योग इत्यादि। जिससे हमें तनाव से बाहर निकलने में मदद मिलती है। जरूरी है कि तनाव प्रबंधन के लिए योग करते समय अपनी सांस का उपयोग करें। यह आपको अपने अभ्यास से सर्वोत्तम प्रभाव प्राप्त

करने में मदद करता है। प्रतिदिन थोड़े से आसन के साथ उचित श्वास लेना स्वास्थ्य के लिए एक लंबा रास्ता तय करेगा। यहाँ कुछ एक हैं तनाव प्रबंधन के लिए सर्वश्रेष्ठ योग:

- वज्रासन
- सूर्यनमस्कार
- पद्मासना
- बलासन
- पश्चिमोत्तासन
- शवासना
- वज्रासन यानि हीरे की मुद्रा जिसे करने से पाचन तंत्र ठीक रहता है।
- सूर्यनमस्कार करने से पूरा शरीर स्वस्थ और निरोग रहता है। यह आसन मन को चिंता मुक्त और तनाव से दूर रखता है।
- पद्मासन यह कमल मुद्रा है जो मूलाशय, रीढ़ की हड्डी और पेट को संतुलित करता है।
- बालासन यानि बच्चे की मुद्रा, इसे दो तनाव पूर्ण असानो की बीच में किया जाता है, जो अपने मस्तिष्क को शांत और तनाव प्रबंधन में सहायक कार्य करता है।
- पश्चिमोत्तानासन से हमारे आंतरिक अंगों पर प्रभाव पड़ता है।
- शवासन से हम तनाव से मुक्त हो सकते हैं।

हर साल पूरी दुनिया 21 जून को ‘विश्व योग दिवस’ के रूप में मनाती है। योग एक ऐसा साधन है जिससे हर एक बीमारी का इलाज संभव है। इस क्षेत्र में वाराणसी के रहने वाले 126 साल के स्वामी शिवानंदजी को योग के क्षेत्र में उनके अमूल्य योगदान के लिए राष्ट्रपति ने पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया है। वे अपने अनुशासित जीवन और सुबह के योग से देश में योगासन का आदर्श बन गए। यह हमारे पीढ़ी के लिए जीता जागता उदाहरण है और हमेशा ही रहेगा।

अनुराधा पटनायक

दामनजोड़ी

अनुराधा | 05

एक चुनौती: एक प्रयत्न

बच्चे देश का भविष्य होते हैं। जिस देश के बच्चों को सही परवरिश, पोषण और शिक्षा मिलेगी, उस देश का भविष्य उज्ज्वल होगा। सरकार ने इसके लिए बहुत सारी योजनाएं और नीतियाँ बनाई हैं। पर आज भी आपको सड़क के किनारे भीख मांगते बच्चे दिख जाएंगे एवं होटलों और घरों में काम करते हुए आसानी से बच्चे दिख जाते हैं। बाल श्रम समाज की सबसे बड़ी कुरीति है। विश्व में 10 करोड़ बच्चे बाल श्रमिक हैं जिसमें सिर्फ भारत में कम से कम एक करोड़ बच्चे बाल श्रमिक हैं जो हमारे देश के लिए बहुत बड़ी चुनौती है।

आज हम आजादी का 75 वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। पर जब तक हर एक बच्चे के हाथ में कलम और पेट में अनाज नहीं होगा तब तक हमारे देश का भविष्य उज्ज्वल नहीं होगा। आज हमारे देश में बाल श्रम एक बहुत बड़ी समस्या बन गई है सरकार के प्रयासों के कारण कुछ हद तक यह कम हुई है; परंतु इसे पूर्ण रूप से समाप्त नहीं किया जा सका है। अतः हर एक नागरिक की नैतिक जिम्मेवारी है कि सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने के लिए सरकार का साथ दें तभी हमारे समाज से बाल श्रम जैसी कुप्रथा या समस्या समाप्त होगी। इस देश का हर एक शिक्षित नागरिक का कर्तव्य है कि वह लोगों को जागरूक करें और उन्हें बताएं कि बाल मजदूरी या बाल श्रम एक अपराध है।

संबंधित नीतियाँ

भारत के संविधान के अनुच्छेद 24 के अनुसार 14 वर्ष से कम आयु के किसी बच्चे को किसी कारखाने, खदान कार्यों या किसी अन्य जोखिम वाले कार्यों में नियोजित नहीं किया जा सकता है।

संविधान का अनुच्छेद 39 निर्देशित करता है कि बच्चों को स्वतंत्र व गरिमामय वातावरण में स्वस्थ विकास के अवसर तथा सुविधाएं दी जाएं।

2012 में अधिनियम में संशोधन करके यह नियम बनाया गया कि 18 वर्ष से कम आयु वाले बच्चे को घरेलू कार्यों या किसी अन्य जोखिम भरे कार्य में नहीं नियोजित किया जा सकता है, अगर कोई दोषी पाया जाता है तो उसे ₹50,000 जुर्माना तथा 2 वर्ष की कैद की सजा का प्रावधान है।

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिए 2022 से हर साल 12 जून को विश्व बाल श्रम निषेध दिवस के रूप में मनाने की शुरुआत की है।

शिक्षा का अधिकार

अधिनियम जिसमें संविधान के 86 वें संशोधन अधिनियम 2002 के द्वारा 21 (क) जोड़कर शिक्षा को मौलिक अधिकार बना दिया गया है। इसके द्वारा राज्य को यह कर्तव्य दिया गया कि वह 6 से 14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करेगा। इसके लिए सभी राज्यों में सरकारी स्कूल और मिड डे मील पर काफी ध्यान दिया गया है। स्कूलों में उन्हें मुफ्त पुस्तक और स्कूल ड्रेस दिए जाते हैं। सरकारी स्कूलों में गरीब बच्चों की संख्या बढ़ी है और सुविधा हीन लोग धीरे-धीरे बच्चे को शिक्षा देने के लिए अग्रसर हुए हैं।

हमें यह समझना होगा कि, बाल श्रमिक होने के कारण बच्चों का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता है। उनकी भावनाएं दब जाती हैं। बच्चों का बचपन छिन जाता है और वे छोटे उम्र में ही वयस्क बन जाते हैं। जिस उम्र में बच्चे खेलते और पढ़ाई-लिखाई करते हैं उस समय उनपर रोजी रोटी की चिंता जबरदस्ती थोप दी जाती है।

देश के सभी शिक्षित नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह देश में बाल श्रम को बढ़ावा न दें और लोगों को जागरूक करें। हम सभी नागरिकों का यह कर्तव्य है कि बाल श्रम रोकने के लिए सरकार की सहायता करें। बाल श्रम से सामाजिक बिषमता को बढ़ावा मिलता है। समाज में धनी और धनी होते जाएंगे और गरीब और गरीब होता जाएगा; जिससे भविष्य में लोगों के बीच असमानता की भावना आएगी। जिसके फलस्वरूप देश में अशान्ति का माहौल पैदा हो सकता है; अगर हमें एक सभ्य समाज चाहिए तो सभी वर्ग के लोगों का ध्यान रखना पड़ेगा और बाल श्रम जैसी बुराइयों को जड़ से मिटाना ही होगा।

कामना सिंह
भुवनेश्वर



बाल श्रम

जिनको जाना था यहाँ पढ़ने को स्कूल,
जूतों पर पॉलिश करते वे भविष्य के फूल;
लाचारी गरीबी की मार से मेरा नन्हा बचपन कहीं खो गया,
है रहने को नहीं ठिकाना, फुटपाथ ही अब मेरा घर हो गया।

चाहिए था होना कंधों पर किताब का झोला,
काम ही है अब मेरी तकदीर मुझे गया बोला।
दो वस्तु की रोटी का जुगाड़ ही तकदीर बन गया,
मुझे भी चाहिए थी कलम औरों की तरह,
ये कलम तो बस एक सपना बनकर ही रह गया।
क्या जमाने की मतलबी निगाहें नहीं पड़ती मुझ पर,
या इंसान के अंदर का जमीर ही मार गया,
मुझे भी चाहिए ममता की घनी छाँव,
ईश्वर तो मुझे मेरा हक देना ही भूल गया।
यह पंक्तियाँ आज के बालश्रम की स्थिति-अवस्था का
व्यावहारिक सत्य प्रस्तुत करती हैं।

बाल श्रम पूर्ण रूप से गैर कानूनी है। इस प्रकार की मजदूरी
को समाज में हर वर्ग के द्वारा निंदित भी किया जाता है।
भारत के संविधान के 24वें अनुच्छेद में बाल श्रम का वर्णन
किया गया है।

बाल-श्रम हमारे भारत देश तथा समाज के लिए एक
अभिशाप बन चुका है। अगर जल्दी ही इसे समाप्त नहीं
किया गया तो यह हमारे देश के विकास की गति में अवरोध
साबित होगा। बाल श्रम में कैद बच्चे स्कूल जाना चाहते हैं
और अन्य बच्चों की भांति अपने माता-पिता का प्यार और
परवरिश पाना चाहते हैं लेकिन दुर्भाग्यवश उन्हें अपनी हर
इच्छा का गला घोटना पड़ता है। देश में स्तरहीन स्कूलिंग,
अवसर, शिक्षा के प्रति कम जागरूकता और गरीबी की
वजह से बाल मजदूरी का डर बहुत अधिक है। ग्रामीण
क्षेत्रों में अपने माता-पिता द्वारा कृषि में शामिल चौदह वर्ष
के से कम उम्र के अधिकतर बच्चे पाए जाते हैं। सम्पूर्ण
विश्व में सभी विकासशील देशों में बाल मजदूरी का सबसे
मुख्य कारण गरीबी और स्कूलों की कमी है। समाज से इस
बुराई को जड़ से मिटाने की दिशा में ठोस प्रयासों की काफी

कमी है। इसलिए भी यही
प्रयास होना चाहिए कि जन
मानस में संवेदनशीलता
और सजगता बढ़े।

कम आयु में उनके साथ
क्या हो रहा है, इस बात का
अनुभव करने के लिए बच्चे
बेहद छोटे, प्यारे और मासूम हैं। वे इस बात को समझने
में अक्षम हैं कि उनके साथ क्या गलत और गैरकानूनी
है। बजाय इसके बच्चे अपने कामों के लिए छोटी कमाई
पाकर खुश रहते हैं। अनजाने में वो रोजाना की अपनी
नन्ही सी कमाई में रुचि रखने लगते हैं और अपना पूरा
जीवन और भविष्य इसी काल कोठरी में झोंक देते हैं।

मत करो कोमल हाथों पर इतना अत्याचार,

वो नहीं सह पाएंगे बजरी और कंकर की मार,
बच्चे से काम करवाकर कितने पैसे कमाओगे,

बस सोचकर देखो खुद के बच्चे की जगह,
रुह तक तुम कांप जाओगे।

बाल श्रम एक अभिशाप है और हम सभी को एकजुट
होकर इसके विरोध में आवाज उठानी होगी। अपने
बचपन को स्मृति पटल में रखते हुए बालश्रम रूपी असुर
के पास कैद बच्चों को भी उनका बचपन लौटाना न केवल
हमारा कर्तव्य है, अपितु ईश्वर की आराधना एवं पुण्य कर्म
के समान है।

आइये -----

बाल मजदूरी को जड़ से मिटाये
देश में एक नई अलख जगायें
भूला बचपन उन्हें वापस देकर,
हर एक बच्चों को शिक्षित बनायें।



कल्पना दुबे

दामनजोड़ी

स्वच्छिनी | 07

माँ

माँ..
माँ तो होती है बस एक माँ,
नौ महीने कोख में सुरक्षित
रखे जो, वह तो होती है
एक माँ ।



हर बाधाओं को पार कर
एक नई जिंदगी लाए जो,
वह तो होती है एक माँ ।
कहे बिना ही हर बात समझ जाए जो,
वह तो होती है एक माँ ।

अपनों की खुशियों के लिए दुनिया से
बगावत कर जाए जो,
वह तो होती है एक माँ ।
जीवन की पहली प्यास बुझाए जो,
वह तो होती है एक माँ ।

प्यार की सही परिभाषा समझाए जो,
वह तो होती है एक माँ ।
एक सुकून की नींद जिसके गोद में आए ,
वह तो होती है एक माँ ।

दिन के हर पहर,
रात के हर लम्हे में अपने
बच्चे को सींचे जो,
वह तो होती है एक माँ ।
जीवन का सही सलीका सिखलाए जो,
वह तो होती है एक माँ ।

जितना भी कहूँ मैं,
कम ही पड़ जाए,
ऐसी ही होती है एक माँ ।

स्वाती सुनीता महापाल
अनुगुळ

माँ तो आखिर माँ होती है

माँ तो आखिर माँ होती है,
बोझिल आंखों से,
स्नेहिल पलकों पे,
मेरे सपने वो बुनती है,
माँ तो आखिर माँ होती है ।
अपना जीवन सौंप के हमको,
अपने आँसू पी लेती है,
माँ तो आखिर माँ होती है ।
मेरे उलझनों को सुलझाने में,
अपना अस्तित्व भी खो देती है,
माँ तो आखिर माँ होती है ।
मैंने तो माँ की आंखों में, बस अपने सपने देखे हैं,
उन सपनों को पंख मिले तो, आसमान में वो उड़ती है,
माँ तो आखिर माँ होती है, माँ तो आखिर माँ होती है ॥



प्रियंका पाल
अनुगुळ

ममता की मूरत: माँ

ईश्वर की श्रेष्ठ रचना है माँ,
ममता और वात्सल्य की
मूरत है माँ,
तेरे चहरे पर न देखी
कभी थकावट,
प्यार और परवरिश में
न कोई मिलावट,
तेरे आँचल में आकर
हर गम भूल जाऊँ,
हाथ रखे जो सर पर चैन से मैं सो जाऊँ
त्याग और समर्पण तेरा कैसे करूँ मैं बयान,
तेरे आशीर्वाद से बड़ा नहीं कोई धन ।
तेरे रहने से जीवन में नहीं कोई गम,
दुनिया साथ दे न दे, तेरा प्यार न होता कम ।
माँ, मुझे नहीं जाना काशी या हरिद्वार,
तेरे चरण ही हैं मेरे लिए स्वर्ग के द्वार ।
तेरे चरणों की धूल माथे पर मैं लगाऊँ
तेरी मूरत को इन आंखों पर सदा सजाऊँ ॥



स्नेहा पाल
दामनजोड़ी

असली माँ कौन !!

मातृ-दिवस के नज़दीक आते ही मेरे बच्चों में सुगबुगाहट बढ़ जाती। योजना बनाने लगते हैं कि अम्मी के लिए ऐसा क्या नया लें जो उनके काम का भी हो और उन्हें पसंद भी आये! उनकी इस बारे में हो रही सीक्रेट मीटिंग को मैं जानबूझ कर अनदेखा कर देती क्योंकि उनके ऊपर मुझे सरप्राइज़ देने का दोहरा प्रेशर रहता था एक तो मेरी करमचंद वाली निगाहों से उन्हें अपने योजनाओं को छिपाना मुश्किल होता और दूसरे अरूबा नाम की ढोल के बजने का सबसे बड़ा खतरा रहता। उसे ज़रा सी भी भनक मिली नहीं कि एलान हो जाता “अम्मी हमलोग मदर्स डे पर आपको कोई सरप्राइज़ नहीं देंगे !”

मैं उसकी मासूमियत पर मुस्कुरा उठती। वैसे सच बताऊँ तो मुझे भी हर साल इंतज़ार रहता था अपने माँ होने का मेडल मिलने का ! और ऐसा सोचना गलत भी तो न था ... पूरे नौ महीने अपने भीतर एक नन्ही सी जान को पालना और उसके लिए हर कष्ट सहना, रातों को करवट बदल कर काटना ये सब एक माँ कैसे भूल सकती है। और बच्चे को जन्म देने के बाद तो उसके व्यक्तित्व में बच्चे जैसे चिपक से जाते हैं...। उसे मुर्गी और बतख में अपनी छवि दिखाई देती है जिनके पीछे-पीछे उनके चूज़े घूमते रहते हैं। सूर्योदय से सूर्यास्त तक हर औरत शगुफ़्ता, स्वाति या शीला नहीं बल्कि एक अम्मी, मम्मा या मौम ही होती है। साल के 364 दिन वह अपने जीवन का हर पल बच्चों के नाम कर देती है तो कम से कम एक दिन तो उसका रानी बनकर लाड़ करवाना और खास महसूस करना बनता है।

अरे ! बातों-बातों में मैं कहाँ भटक गई। हाँ तो मैं ये कह रही थी कि बच्चों की मेरी तिकड़ी अपनी तैयारी में लगी हुई थी और मैं इंतज़ार में ! और फिर मदर्स डे आ ही गया। मुझे बच्चों ने Best Mommy का अवार्ड दिया, रंग-बिरंगे कागज में बंद तोहफे दिए और मेरे पसंदीदा फूलों का गुलदस्ता हाथों में पकड़ा कर अरूबा मुझसे चिपक गई। मेरी आँखें भर आईं और मैंने तीनों बच्चों को अपनी बाहों में उसी तरह भर लिया जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने डैनों में छिपा लेती है। उन सबकी पैदाइश से लेकर अब

तक का सफर मेरी आँखों के आगे घूमने लगा था और मैं जैसे किसी अलग दुनिया में चली जा रही थी कि तभी “अस्सलामु अलैकुम खाला” की आवाज़ से मैं वर्तमान में लौट आई।



मैंने देखा कि मेरे घर झाड़ू बर्तन करने वाली अजमेरी अपनी छोटी बहन गुलाफ़शां के साथ अपनी ड्यूटी निभाने आ चुकी थी। अजमेरी को देखते ही मुझे अपना Best Mommy का अवार्ड गिर कर चूर होता सा लगा और माँ के रूप में मेरा कद छोटा होता सा महसूस हुआ। न जाने मुझे क्या हुआ कि मैं आगे बढ़ी और अपने पसंदीदा फूलों का गुलदस्ता मैंने अजमेरी की हाथों में दे दिया और उसे नम आँखों से विश किया ...” हैप्पी मदर्स डे अजमेरी !!”

“ई गुलदस्ता आप हमको काहे दे दिए खाला और ई मदर्स डे क्या होता है !” वह आँखें बड़ी-बड़ी करके मुझसे सवाल कर रही थी।

“अरे ये माँ लोगों का दिन होता है। तू भी तो माँ सी ही है इसलिए ये फूल तेरे लिए !” मैंने प्यार से उसके सर पर हाथ फेरते हुए कहा।

“आप भी न खाला....!” कहते हुए वो खिलखिला दी। छोटी गुल (गुलाफ़शां को प्यार से हम गुल कहते हैं) भी खी खी खी खी कर हँस दी।

“अब हँसना बंद कर और झाड़ू लगाना शुरू कर, हम तब तक बर्तन धो रहलियो। और सुन खाला जइसे बताइन है वइसे ही खूब अच्छा से झाड़ू पोंछ कर लेभीं !” अजमेरी का ये निर्देश माँ के निर्देश से कम न था।

अजमेरी...27 की उम्र में 40 की दिखने वाली एक गरीब लड़की !! अभी पिछले 3 महीनों से ही मेरे यहाँ काम पर लगी हैं ये दोनों बहनें। तब से धीरे-धीरे बातों-बातों में इनकी जिंदगी परत दर परत मेरे सामने खुलती गई।

गुल 18 साल की है पर दिल से किसी छोटे बच्चे जैसी मासूम! जब वो 7 साल की थी तभी उसकी माँ हार्ट अटैक से चल बसी। तब 16 साल की अजमेरी पर जैसे ज़िम्मेदारियों का बोझ आन पड़ा क्योंकि गुल के साथ उससे बड़ी और 2 बहनें और 1 भाई भी था। उन सबसे बड़े और भी दो भाई थे जो जवान होते ही घर बसा कर अलग हो गए और ज़िम्मेदारियों से अपना पल्ला झाड़ लिया। रिक्शा चलाने वाले बाप ने अजमेरी की भी शादी कर देना चाही लेकिन उसने साफ मना कर दिया कि अगर मैं शादी करके इस घर से विदा हो जाऊँगी तो छोटी गुल और दूसरे भाई बहनों को कौन संभालेगा !! और फिर उसके बाद लोगों के घरों में जूटे बर्तन माँज कर अपने घर खुशियाँ लाने की जुगत में अजमेरी ऐसी जुटी कि उसके परिपक्व विचारों जैसे उसका व्यक्तित्व भी प्रौढ़ हो गया। हर वक्त भाई बहनों की पढ़ाई और शादी की फिक्र में ऐसे डूबी रहती कि अपने उम्र से 10 साल बड़ी लगती। कई घरों में काम करने के बाद एक सरकारी स्कूल में खाना बनाने जाती। फिर भी अगर मैं उसे घर में साफ सफाई या सब्जी काटने का कोई काम अलग से कह देती तो वो कभी मना नहीं करती।

“दीजिये न खाला, हो जाएगा ...आप बस काम बता दीजिये हम कर लेंगे।” वो बड़े सुकून से ये कहती और मैं सोचती कि काम के इतने प्रेशर में भी ये इतनी शांत कैसे रहती है !! हम माँएँ तो न जाने ऐसी स्थिति में कितना हंगामा कर चुकतीं।

गुल का झाड़ू पोछा हो जाने पर वह उसे अपने पास बिठा लेती और कहती, “सुन, हम बर्तन मइस देत हौ तू अच्छा से खंगालते जा। ठीक से कपड़ा से एकएक गो धो के चमका, और ख्याल रहे बर्तन टूटे के न चाही।” वह किसी माँ की तरह गुल को समझाती और गुल भी नेक बच्चे जैसे उसकी बात मानती। बर्तन माँजने के क्रम में वो और भी न जाने उसे समझदारी की कितनी बातें सिखाती।

“सुन, अब तोको कोई पूछतौ त घर के बात मत बताइहो काहे के घर के बात घरे में रहे के चाही।” गुल भी बर्तन धोते धोते और भी बहुत कुछ सीख जाती।

एक बहन की शादी वो पहले ही कर चुकी थी और पिछले हफ्ते ही उसने बताया था कि दूसरी की भी शादी तय हो

गई है। घर के सारे साजो सामान के इलावा 1 लाख नकद की डिमांड आई है।

“बाप रे अजमेरी, कहाँ से करोगी ?” मैंने हैरान होते हुए पूछा।

“करना पड़ेगा खाला, लड़का अच्छा है इसलिए 1 लाख देंगे। हम इंतज़ाम में लगे हैं।”

“ठीक है, पर अपनी सेहत का भी थोड़ा ख्याल करो। शादी के बाद इतने घरों में काम मत करना। थक जाती हो तुम।” मैंने सहानुभूति जताते हुए कहा।

“सादी के बाद तो और खटना पड़ेगा वरना कर्ज़ कैसे तोड़ेंगे?? नकद के इलावा घर का समान और शादी के इंतज़ाम में भी तो पैसा लगेगा।”

मेरा रोम रोम सिहर गया। इतना तो शायद कोई अपनी माँ भी नहीं सोचती होगी। मैंने मन ही मन अजमेर के ख्वाजा बाबा से दुआ की कि अपनी इस अजमेरी का ख्याल रखना!!

“जानती हैं खाला, मेरे चाचा का बेटा-बेटी हमको कहता है कि तुम ऐसे बुढ़िया नियर काहे रहती है। अच्छा पहन ओढ़, थोड़ा फ़ैसन कर। अब उनको कौन बताए के एतना टेंसन में फ़ैसन कहाँ से होगा।”

बात तो सही है उसकी। अपनी माँ तो बाप के सहारे बच्चों के हर बात की प्लानिंग कर लेती है पर यहाँ तो बाप की तरह कमाने से लेकर माँ के जैसे हर चीज़ का जुगाड़ भी इसके ही ज़िम्मे हैं। वाकई मदर्स डे पर हर माँ से ज़्यादा प्यार और इज़्ज़त की हकदार तो अजमेरी जैसी अनजानी अनकही माँएँ हैं जो जन्म न देने पर भी न तो अपनी ममता में कोई कमी आने देती हैं और न ही ज़िम्मेदारी निभाने में!

जब से मैंने अजमेरी को जाना है मेरे मन में एक ही सवाल उठता है कि असली माँ कौनजन्म देने वाली असली माँ या अजमेरी जैसी पालनहार ! काश एक मातृ-दिवस ऐसी माओं के नाम का भी होता !!

शगुफ़ता जबीं
रांची

May Day-मजदूर दिवस

हमारे देश के पिता बापुजी का यह मानना था कि एक देश का विकास तभी संभव हो सकता है जब उस देश का श्रमिक संगठित एवं कार्यदक्ष हो।

श्रमिक आज नहीं सदियों से काम करते आ रहे हैं। हम हमारे देश के इतिहास की कलाकृति, राजस्थान से लेकर ओड़िशा, दिल्ली से लेकर चेन्नई तक की सुंदरता देखें जैसे कि कोणार्क मंदिर, जगन्नाथ धाम, मदुरै का मिनाक्षी मंदिर या दिल्ली की कुतबमीनार, ताजमहल कई सालों से हमारे इतिहास के पन्नों में सज्जित है। आज भी लोग उनकी कला देखने के लिए विश्व के हर एक कोने से हमारे देश में आते हैं।

इसे बनाने में कई श्रमिकों और कारीगर का हाथ है इनकी कार्यक्षमता को देखकर उनके हुनर और दक्षता को नमन करने का मन होता है। हम श्रमिकों के लिए साल में सिर्फ एक दिन यानि मई 1 तारीख को 'श्रमिक दिवस' मानते हैं। बहुत सालों पहले श्रमिक 15 से 18 घंटों तक काम करते थे; 1 मई 1886 को अमेरिका में एक आंदोलन शुरू हुआ इस आंदोलन में मजदूर आठ घंटे काम करने की मांग रखे थे। इसी दिन को 'अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस' के नाम से समर्पित किया गया था।

भारत में 1 मई 1923 के दिन "श्रमिक दिवस" मद्रास से शुरू हुआ; यह वही मौका था जब कि पहली बार लाल रंग

का झण्डा मजदूर दिवस के प्रतीक के तौर पर इस्तेमाल किया गया था। यह एक दिन श्रमिक के सम्मान के लिए मनाया जाता है। एक इंसान जब एक साफ और शांत वातावरण में रहे जिसमें अच्छी रोशनी, हवा मिले तो उसको काम करने की शक्ति दो से तीन गुण बढ़ जाती है।

इसलिए, हमारा दायित्व है कि, एक मजदूर और उसके परिवार को खुशी और सुख मिले। उसके परिवार को खाना और स्वास्थ्य सेवाएं ऐसी मिले कि वह एक श्रमिक होने में गर्व महसूस करे और देश की उन्नति में उसका योगदान कितनी अहमियत रखता है वह समझ सके।

"श्रमिक देश की शान है

उसकी रक्षा हमारा धर्म है

देश का बड़ा गर्व और स्वाभिमान

जब हम करें श्रमिक का सम्मान"

करबी कादंबिनी कर

भुवनेश्वर



क्यों कि ठहरा जो मजदूर

ऊंची इमारतें बनाई मैंने खुद सड़कों पर सो कर,
कितनों के घर बसाए मैंने; अपनी गृहस्थी खोकर,
कई होली बेरंगी मनाई मैंने; कई दिवाली बेनूर,
हूँ त्योहारों के रौनको से अनजान
क्योंकि ठहरा जो मजदूर।

पेड़ों की छाँव में गर्मी कटती है,
मेरे खुले आसमान में सर्दी,
जिन्दा रहूँ तो तिरस्कार;
मिले मौत पर सिर्फ हमदर्दी,
महल बनाए मैंने पर हूँ;
फुटपाथ पर रहने को मजबूर,
क्यों कि ठहरा जो मजदूर।

शहर बसाए मैंने और न जाने कितनी फैक्ट्री,
फिर भी दो जून की रोटी को तरसू,
लाखों को दिलाकर नौकरी;
देश की उन्नति में मेरा भी योगदान है,
फिर भी हूँ अपनी पहचान से दूर,
क्यों कि ठहरा जो मजदूर।



स्वाती तिवारी

अनुगुळ

सर्जनी | 11

Stress Management by Yoga

Do Yoga: Manage Stress

It has been scientifically proven that Yoga and Meditation manage stress. So why isn't everyone doing yoga and meditation to relieve stress? Let's investigate

Before managing the stress let's discuss the types of stress?

There are two types of stress. Good and Bad Stress. Good stress is short-term and it inspires and motivates you, focuses your energy and enhances performance. Bad stress, however, is the kind that wears you out, leaves you jittery and is harmful to your health. Bad stress or distress, can lead to anxiety, confusion, poor concentration and decreased performance. Stress is more deadly in comparison with the corona pandemic in terms of the hurt caused to health.

Everyone has different stress triggers. Work stress tops the list, according to surveys. Forty per cent of workers admit to experiencing office stress, and one-quarter say work is the biggest source of stress in their lives.

So why aren't we managing our stress levels through Yoga and Meditation?

One of the reasons is the lack of formal education on Yoga starting from the school level.

Another reason is lack of motivation. Before motivating themselves, people should first know the availability of various techniques for managing stress. A google search on keywords "manage stress" results in 85 crores of web pages. The search term "stress management through yoga" returns about 6 crore pages of information. This implies

that there is so much information being published on the internet. The reason is lots of people searching for a solution to de-stress themselves through Yoga. So somebody is not alone in this.

Manage Stress:

The good news is that Stress can be managed by various means. One of the best ways is Yoga and Meditation.

There are many asanas in Yoga that shall help in reducing Stress. The trick lies in

identifying the poses which are improving the situation. This can be done by mindfully being present continuously while doing the asanas. In the process identify the asanas that are resolving the problem

and which are aggravating the situation. It is more important than the asanas that the asanas which are aggravating the situation should be avoided.

Yoga asanas and meditation for stress-relief: I have researched and tried the following pranayama and yoga asanas on myself. It worked like a wonder.

A few popular types of pranayama include

- Alternate nostril breathing (Nadi shodhana)
- Ujjayi breathing
- Breath of fire (kapalabhati)
- Lion's breath (simhasana)
- Sitali breath



“**Yoga does not always cure stress. It neutralises it through increasing awareness and by changing self-perception.**”

Debasish Mridha

- Humming bee breath (bhramari)

Yoga poses for stress relief

- Cat-Cow Pose (Marjaryasana to Bitilasana)
- Child's Pose (Balasana)
- Legs-Up-the-Wall Pose (Viparita Karani)
- Corpse Pose (Savasana)

Yoga and Meditation are the saviours of stressful life. One has to accept the fact and act on it. This shall reduce stress levels substantially and make life happier and healthier.

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः ।सर्वे सन्तु निरामयाः ।सर्वे भद्राणि पश्यन्तु ।मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत् ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

Meenakshee Choudhury
Bhubaneswar

Child Labour - A Curse

Child labour is work that is done by children which restricts or damages their physical, emotional, intellectual, social or spiritual growth as children, and which denies their right to develop, play or go to school.

Emotional aspects and impacts of child labour

When children develop into maturity, growth is not limited to the physical body development but also in the social and emotional aspects of life. Children's emotional development relates to the different experiences that children go through as they interact directly or indirectly with the environment around. Children's responses to the different feelings they experience every day have a major impact on their choices, their behaviour, and on how well they cope up and enjoy life in society.

The aspect of emotional development and growth is a very complicated aspect to comprehend as it differs from child to child, but the bottom line in all this is that, emotional development starts at early childhood and continues into adulthood, and some of the basic primary emotions that may first be recognized especially in babies are: joy,

anger, sadness and fear. Later, children begin to develop more complex emotions like shyness, surprise, elation, embarrassment, shame, guilt, pride and empathy. However, it is prudent to note that, kids between the ages of 5 to 12, usually considered as junior school pupils are said to be in a stage of learning how to ascertain their emotions, possibly, trying to understand why and how these emotions happen to them and how they manage them properly, but this stage is so dynamic that, as children grow, the things that provoke their emotional responses change as well.



The following are the general key reasons that influence child labour

1) Poverty coupled with high dependence ratio of adults on children

Children work to ensure the survival of their family and themselves, although these child labourers are not well paid as adults. Children still remain relevant in the financial support and contribution to

their poor families especially in developing countries.

2) Increased rural urban migration

The rapid rural to urban migration is one of the major cause for the increased rate of child labour in urban areas of developing countries

3) Poor working conditions

Exploitative working conditions in processing factories which are characterized by smoke chemicals, too much noise and vibrations, make employers opt for children who have less or none of work bargaining skills/ power for example on salary and safety guards among others. In the long run children fall victims of chronic sickness due to their carelessness and ignorance

4) High demand for cheap unskilled labour force

Today, there is high demand of unskilled labour in almost every sector ranging from agriculture to industries. Because children are literary unskilled in professional work and with, poor bargaining skills, processing firms as well as the agricultural sector inevitably take up children as the most reliable labour force.

Challenges faced by child labourers

Child labour creates bad side effects that hinder a child's intellectual, emotional and social development.

Health impacts

The most common side effect of child labour is the deprivation of quality life, which in the long ran affects the mental health of the minor.

Social and economic consequences

This have been inevitably experienced in the lives of victims, which either started at childhood moving up to adulthood or

started at tender years until adulthood with negative significant impact.

Approaches to combatting child labor

1) Creating awareness

In creating awareness, community participatory techniques are prudent to be put into consideration, societies out to be empowered with not only the knowledge, but also the will to proclaim their shared vision for change.

2) Corporate Engagement

There has been enactment of pragmatic approaches to creating alliances with great corporations and other private sector stakeholders. The consideration of these public private partnerships, and other corporate social concerned practices as mechanisms to combat child labour.

3) Quality Education

The aspect of education for children has been generally accepted as a relevant approach in combatting child labour, but in critical analysis, the quality of this education is also questionable to whether or not, the education attained would transform the lives of children from childhood to adulthood.

4) Establishing child labour monitoring systems

The purpose of child labour monitoring mechanisms is to guarantee that kids are attending schools, or other planned activities, or play with their peers and are not going to work or being subjected to other forms of manipulation or exploitation. Monitoring of recipients and other at-risk kids in the society comprises frequently scrutinizing the places where kids may be working and discerning their other activities, such as going to school or socializing

5) Adopting a holistic approach

This mechanism demands a collective design of approaches and strategies that maximize the impact and enhances sustainability of the program through reduction, prevention, and ultimate elimination of child labour. Therefore, there must be several multifaceted and interrelated approaches giving diverse solutions to the vice of child labour.

In other words, a monitoring project must target several socio-economic issues linked to the incidence of child labour as much as possible, including access to and the quality of education, poverty, awareness and understanding, gender and social discrimination and exclusion, cultural and traditional practices, food security, empowerment, among others.

Nibedita Bal
Angul

Utkal Diwas

Seema, a young mother of 2 young children, Nita(12) and Nikhil(9), had to rush home as her mother Nalini, was taking care of the children, while her husband Anuj was away on tour. They had recently moved to Bhubaneswar from Bangalore, because Seema had been transferred to the capital city of Odisha.

Reaching home, she found that Nalini was sitting with the kids and laughing over something in the drawing room.

Seeing Seema, Nita rushed towards her and gave her a huge hug. "Mom, you look so tired!", she said.

"Yes, dear, it was a really tiring day. But thank God, we have a holiday tomorrow, because of Utkal Diwas."

"So do we," said Nikhil.

"But why do we celebrate Utkal Diwas, Mom?"

"Good question. Let's ask Granny about this," said Seema and sat beside Nalini.

Nita : "Granny, tomorrow all three of us have holiday on account of Utkal Diwas. Why do we celebrate Utkal Diwas on 1st April?"

Nalini: "Well, the answer is simple. We celebrate Utkal Diwas on 1st April, because

on this day in 1936, Odisha was carved into a separate and independent state out of Bihar, Bengal and Madras Presidency".

Nikhil: "Oh!

Nalini: "But that is only after a long struggle".

Nita : Oh?

Nalini: "Yes dear, Odisha has a long history of being ruled by foreign invasions. It started with Emperor Ashoka in 200 BC, followed by Emperor Kharavela and then by the Mughals."

Nita: "So after Mughals, then what?"

Nalini: "Then the British took over Odisha in 1803, bringing about far reaching changes in the state."

Nita: "That is really great!! But why was Odisha formed?"

Nalini: "That is because, many prominent leaders like Madhusudan Das, Gopabandhu Das, Gangadhar Meher and others wanted to have a politically separate state under the British rule for the Odiya speaking people".



Nikhil: "Oh,so Odisha was formed for the Odiyas!!"

Nalini: " Yes dear, but,a lot needed to be done because the newly formed state had only 6 districts namely, Cuttack, Puri, Sambalpur, Balasore, Ganjam and Koraput.

Cuttack was the state capital till 1948 after which Bhubaneswar became its capital."

Nita: " This is so cool Granny!!"

Nalini: "Also I forgot to mention that we have our own state anthem, "Bande Utkala Janani " .

Nita:"Thank you so much for narrating the whole story behind Utkal Diwas!!"

Seema joined the children and smilingly said," thank you so much Ma for the useful insights! You should have been a History professor!!"

Nalini: No dear,it is just that we should know our roots.Besides as a proud Odiya, I have to pass on the knowledge to our next generation."

Shaswatee Mohanty
Bhubaneswar

ଉତ୍କଳ ଦିବସର ଅନୁଚିନ୍ତା

“ବର୍ଷାଣାଂ ଭାରତ ଶ୍ରେଷ୍ଠଃ ଦେଶାନାଂ ଉତ୍କଳ ଶୁଭ
ଉତ୍କଳସ୍ୟ ସମଦେଶ, ଦେଶ ନାସ୍ତି ମହିତଲେ”

ଭାରତ ବର୍ଷ ମଧ୍ୟରେ ଶ୍ରେଷ୍ଠ ଦେଶ ବା ରାଜ୍ୟ ଭାବରେ ଉତ୍କଳ ଭୂମି କେଉଁ ଆବହମାନ କାଳରୁ ଶ୍ରେଷ୍ଠ ପ୍ରତିପାଦନ କରି ପ୍ରସିଦ୍ଧି ଲାଭ କରି ଆସିଛି । ଯଥା- ଉତ୍କଳ, କୋଶଳ, ଉତ୍ତ, କଳିଙ୍ଗ ଇତ୍ୟାଦି ନାମରେ । ଉତ୍କଳ ନାମଟି ବିଭିନ୍ନ ଶାସ୍ତ୍ର, ପୁରାଣ, ରାମାୟଣ ମହାଭାରତରେ ପରିକୀର୍ତ୍ତିତ ହୋଇ ଆସିଛି । ପ୍ରାକୃତିକ ସମ୍ପଦ ଓ ସୌନ୍ଦର୍ଯ୍ୟରେ ଭରପୂର ଉତ୍କଳ ସମଗ୍ର ଭାରତବର୍ଷରେ ନିଜର ମହନୀୟତା ପ୍ରତିପାଦନ କରିଅଛି ।

ପୂର୍ବେ କଳିଙ୍ଗ ନାମରେ ପରିଚିତ ଥିବା ଓଡ଼ିଆ ଜାତି ନିଜର ନୌବାଣିଜ୍ୟ ଓ ସାହସିକତା ପାଇଁ ସମଗ୍ର ବିଶ୍ୱରେ ସୁଖ୍ୟାତି ଅର୍ଜନ କରିଥିଲା । ଗଙ୍ଗାଠାରୁ ଗୋଦାବରୀ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବିସ୍ତୃତ ବିଶାଳ ଭୂଖଣ୍ଡ ଅତୀତରେ ଉତ୍କଳ ସାମ୍ରାଜ୍ୟ ବୋଲି ବିବେଚିତ ହେଉଥିଲା । ପୌରାଣିକ ଆଖ୍ୟାନ ଅନୁସାରେ ରାଜା ସୁଦୁମ୍ନଙ୍କ ତିନିଜଣ ପୁତ୍ରଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଜ୍ୟେଷ୍ଠ ପୁତ୍ରଙ୍କ ନାମ ଥିଲା ଉତ୍କଳ । ସେ ଯେଉଁ ଅଞ୍ଚଳ ପିତାଙ୍କ ଠାରୁ ପ୍ରାପ୍ତ କରିଥିଲେ, ସେହି ଅଞ୍ଚଳର ନାମ ନିଜ ନାମାନୁସାରେ ରଖିଥିଲେ ଉତ୍କଳ । ନଦନଦୀ ଗିରିକନ୍ଦର ପରିପୂର୍ଣ୍ଣ ପ୍ରାକୃତିକ ସୁସମା, ରମ୍ୟ ସ୍ଥାପତ୍ୟ କଳାର କଳାତୀର୍ଥ ଉତ୍କଳ, ଜରାଜୀର୍ଣ୍ଣ ହୋଇ କେବଳ ଇତିହାସର ମୁକ୍ତସାକ୍ଷୀ ହୋଇ ରହିଥିଲା । ଭୌମବଂଶୀ ଓ ସୋମବଂଶୀ ରାଜାମାନଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ନାମିତ ଉତ୍କଳ ରାଜ୍ୟକୁ ଦ୍ୱାଦଶ ଶତକାର ରାଜା ଚୋଡ଼ଗଙ୍ଗ ଦେବ ଗଙ୍ଗାଠାରୁ ଗୋଦାବରୀ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବିସ୍ତୃତ ଅଞ୍ଚଳକୁ “ସକଳେକ୍ତଳ” ନାମ ଦେଇ ଶାସନ କରିଥିଲେ ।

ସମୟ କ୍ରମେ ୧୮୦୩ ବେଳକୁ ଓଡ଼ିଶା ବୈଦେଶିକ ଶାସକ ଇଂରେଜମାନଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ଶାସିତ ହେଲା । ବହୁ ଓଡ଼ିଆ ଅଞ୍ଚଳ ବିହାର ଓ ବଙ୍ଗଳା ସହିତ ମିଶିଗଲା । ଇଂରେଜମାନେ ବହୁ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାଭାଷୀ ଅଞ୍ଚଳକୁ ଖଣ୍ଡବିଖଣ୍ଡିତ କରି ବିଭିନ୍ନ ରାଜ୍ୟ ସହିତ ମିଶାଇ ଦେଲେ । ବହୁ ଆନ୍ଦୋଳନ ପରେ ୧୯୩୬ ମସିହା ଅପ୍ରେଲ ୧ ତାରିଖରେ

ଓଡ଼ିଶା ରାଜ୍ୟ ବିହାରଠାରୁ ଅଲଗା ହୋଇ ଭାରତର ପ୍ରଥମ ଭାଷାଭିତ୍ତିକ ରାଜ୍ୟ ଭାବରେ ମାନ୍ୟତା ପାଇଲା । ୧୯୩୬ ମସିହା ପରେ ବିଚ୍ଛିନ୍ନ ହୋଇ ରହିଯାଇଥିବା ଓଡ଼ିଆ ଅଞ୍ଚଳକୁ ଏକତ୍ରିତ କରି ଅଙ୍ଗଭଙ୍ଗ ଭାବରେ ଓଡ଼ିଶାକୁ ରହିବାକୁ ପଡ଼ିଲା । ଆନ୍ଧ୍ରର ସାମ୍ରାଜ୍ୟବାଦୀ ନୀତି ଫଳରେ ଏବେ ବି କୋଟିଆ ଅଞ୍ଚଳ ବିବଦମାନ ସ୍ଥିତିକୁ ଚାଲିଯାଇଛି । ସିମାନ୍ତବର୍ତ୍ତୀ ଅଞ୍ଚଳଗୁଡ଼ିକରେ ଓଡ଼ିଶାର ବିଶାଳ ଖଣିଜ ସମ୍ପଦ ଓ ପ୍ରାକୃତିକ ବିଭବ ଉପରେ ପଡ଼ୋଶୀ ରାଜ୍ୟଗୁଡ଼ିକର ଲୋଲୁପ ଦୃଷ୍ଟି ଲାଗି ରହିଛି ।

ଭାଷା ପାଇଁ ସିନା ଭୂମି ଖଣ୍ଡେ ମିଳିଲା କିନ୍ତୁ ତାହା ଏବେ ବି ସୁରକ୍ଷିତ କି ସୁଗଠିତ ନୁହେଁ । ଯଦି ପୁନର୍ବାର ଓଡ଼ିଶା ଅଞ୍ଚଳକୁ ଏକତ୍ରୀକରଣ କରିବାର ପ୍ରୟାସ ଓ ପ୍ରଚେଷ୍ଟା ନ କରାଯାଏ, ତେବେ ସମୟ କ୍ରମେ ଗୋଟିଏ ପରେ ଗୋଟିଏ ଓଡ଼ିଆ ଅଞ୍ଚଳ ପଡ଼ୋଶୀ ରାଜ୍ୟର କର୍ତ୍ତୃତ୍ୱାଧୀନ ହୋଇଯିବ । ଏଥିପାଇଁ ପ୍ରତ୍ୟେକ ଓଡ଼ିଆ ସ୍ୱାଭିମାନୀ ହୋଇ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବା ଆବଶ୍ୟକ । ବୀର ଦର୍ପରେ ପ୍ରତ୍ୟେକ ଓଡ଼ିଆ ଓଡ଼ିଶାର ପୁନର୍ଗଠନ ଓ ଏକତ୍ରୀକରଣ ପାଇଁ ସମର୍ପିତ ଭାବେ ଆଗଭର ହେବା ଦରକାର । ତେଣୁ ପ୍ରତ୍ୟେକ ଓଡ଼ିଆ ସଚେତନ ହୋଇ ଓଡ଼ିଶାକୁ ସର୍ବାଙ୍ଗ ସୁନ୍ଦର ରୂପ ଦେବା ପାଇଁ ଆଗେଇ ଆସିଲେ, ବହୁତ୍ୟାଗ ଦ୍ୱାରା ଗଠିତ ଉତ୍କଳ ରାଜ୍ୟର ସାର୍ବଭୌମତ୍ୱ ଅକ୍ଷୁର୍ଣ୍ଣ ରହିପାରିବ । “ଉତ୍କଳ ଦିବସ”ର ଯଥାର୍ଥ ମର୍ଯ୍ୟାଦା ରକ୍ଷା ହୋଇପାରିବ ।



ଡଳିପ୍ରଭା ସାମଲ
ଦାମନଯୋଡ଼ି

ଧୂକ୍ ମୋଡେ

ଆଃ... ଯନ୍ତ୍ରଣାରେ ଚିଲେଇ ଉଠିଲା ସୁନିତା ।

ଆତ୍ମଲ ପାଇଁ ଟାକୁଆ ହୋଇଆସିଥିବା କଥା ଆତ୍ମକୁ ପନିକିରେ ଫତଉ ଫତଉ ପାପୁଲି କଟିଯାଇଥିଲା ତାର । କ୍ଷତ ଗଭୀର ଥିଲା । ଝର ଝର ରକ୍ତ ଝରିପଡ଼ି ଚଟାଣ ଅରାଏ ନାଲି ହୋଇଗଲା । ବିଚାରୀ ବିକଳରେ ଶାଢ଼ୀ କାନିରେ ଚାପି ଧରିଲା କଟିଯାଇଥିବା ଜାଗାକୁ । କଷ୍ଟ ହେଉଥିଲା । ସେଥିରେ ପୁଣି ଏତେଗୁଡ଼ିଏ ତାଜା ରକ୍ତ ଦେଖି ଛାନିଆ ହୋଇଗଲା ସେ । ଫୋନକରି ଡାକିବ କି ସମରଙ୍କୁ । କାଳେ ଷ୍ଟିର୍ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ନା ଆଉ ସ୍ଵାମୀ ହୋଇ କେବେ ଭାବିଛନ୍ତି କି ତା କଥା । ଅଭିମାନରେ ଦୁଇବୁଝା ତତଲା ଲୁହ ଗଡ଼ି ପଡ଼ିଲା ଆଖୁରୁ । କିଛି ସମୟ ଲୁଗାକାନିରେ ଚାପିଧରିଲା ପରେ ରକ୍ତସ୍ରାବ ବନ୍ଦ ହୋଇଗଲା ମନକୁ ମନ । ଧୀରେ ଲୁଗାକାନି ଟିକେ ଆଡେଇ ଦେଖିଲା, କ୍ଷତ ଗଭୀର ହେଲେ ବି ଷ୍ଟିର୍ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବନି । ଯାହାହେଉ ଖୁଆପିଆ ସାରି ବାସନ ମାଜି ସାରିଥିଲା, ନହେଲେ ଏବେ କଣ କରିଥାନ୍ତା ସେ ।

ମନ ଦୁଃଖରେ ଆତ୍ମ ଝୁଡ଼ି, ପନିକି ସେଇଠି ଛାଡ଼ି ଦେଇ କଟି ଯାଇଥିବା ଜାଗାରେ ଟିକେ ମଲମ ଲଗେଇ ଗଡ଼ି ପଡ଼ିଲା ଖଟ ଉପରେ । ହୁଏତ ଗୋଟିଏ ଟଙ୍କାକଡ଼ ଇଂଜେକ୍ସନ ନବାକୁ ପଡ଼ିପାରେ । ସନ୍ଧ୍ୟାରେ ସମର ଆସନ୍ତୁ । ତାଙ୍କ ସାଙ୍ଗରେ ଯାଇ ଗୁରୁ କିନିକରେ ଇଂଜେକ୍ସନ ଦେଇ ଆସିବ । ଧେଉଁ ସେ କାହିଁକି ସମରଙ୍କୁ କହିବ ଯେ । ନିଜେ ଯାଇ ଦେଇ ଆସିବ । ସବୁ କାମ ତ ନିଜେ କରୁଛି । ଅଭିମାନ ବହଳ ହୋଇଥିଲା । କେତେ ଥର କହିଲାଣି ପାଖରେ ଛୋଟ ପିଲାଟିଏ ରଖିଲେ କେତେ ସୁବିଧା ହୁଅନ୍ତା । କାମ ଟିକିଏ ହାଲକା ହୋଇଯାଆନ୍ତା ତା ଉପରୁ । ଦାରିଦ୍ର୍ୟ ଏ ଅଞ୍ଚଳରେ ଅଧିକ । ତେଣୁ ସହଜରେ ଛୋଟ ପିଲା ମିଳି ଯାଆନ୍ତି କାମ କରିବାକୁ । ହେଲେ ସମର ତା କଥା କେବେ ଶୁଣନ୍ତିନି । କୁହନ୍ତି ରଖିବ ଯଦି ପାର୍ଟି ଟାଇମ କାମବାଲାଟିଏ ରଖି । ଦୁଇ ତିନିଥର ଏମିତି ପାର୍ଟି ଟାଇମ କାମବାଲା ରଖି ମନ ଛାଡ଼ିଯାଇଛି ସୁନିତାର । ମାସକୁ ଅଧା ଦିନ ଛୁଟି । ରଖିବା ଯାହା ନ ରଖିବା ସେଇଆ । ଖାଲି ଦରମା ଗଣିବା ସାର ।

ଏକ ଉପାନ୍ତ ଅଞ୍ଚଳରେ ସହକାରୀ ଯନ୍ତ୍ରୀ ଭାବରେ କାମ କରନ୍ତି ସମର । ସେ ଘରର ବଡ଼ପୁଅ । ଅନେକ ଦାୟିତ୍ଵ ତାଙ୍କ ଉପରେ । ଏଣୁ ମନଖୋଲି ଖର୍ଚ୍ଚ କରିପାରେନି ସୁନିତା । କାମ କରିବାକୁ ଡରେନି । ଏବେ ଚାରି ବର୍ଷ ହେଲା ହାର୍ନିଆ ବାହାରି ଥିବାରୁ ଆଉ ବେଶି କାମ କରିପାରୁନି । ପରିଶ୍ରମ ପଡ଼ିଲେ ପେଟ ବଥଉଛି । ଦୁଇଟି ପିଲା । ଶାଶୁ ଶଶୁର ପ୍ରାୟ ସମୟ ତା ପାଖରେ । ସେମାନେ ବି ବାର୍ଦ୍ଧକ୍ୟ ଜନିତ ରୋଗରେ ପୀଡ଼ିତ । ସେଥିରେ ପୁଣି ହାଟରୁ ଶସ୍ତାରେ ପାଇଲେ ଆତ୍ମ ଦିନେ ଆତ୍ମ, ଅଁଳା ଦିନେ ଅଁଳା, କରମଙ୍ଗା, ବିରି, ମୁଗ ଅମଳ ରତୁରେ ଚୋପା ଲଗା ବିରି ମୁଗ ଆଣି ଗଦେଇ ଦିଅନ୍ତି ସମର । ବାସ୍ ତାପରେ ସାରା ଦିନ କାମ ଚାଲେ ତାର । ଆଚାର କରି, ଆତ୍ମଲ ଶୁଖେଇ, ବଡ଼ି ପାରି, ମୁଗଭାଜି ରଗଡ଼ି ଚୋପା ଛଡ଼ାଇ, ନୟାନ୍ତ ହୁଏ ସେ । ଘର ପାଇଁ କିଛି ରଖିସାରିଲା ପରେ ସବୁ ପଠା ହୋଇଯାଏ ତିନି ନଶୟ, ମଲାଶୁର, ଖୁଡ଼ି ଶାଶୁ, ମାଉସୀ ଶାଶୁମାନଙ୍କ

ଘରକୁ । ପ୍ରତିବଦଳରେ ପ୍ରଶଂସା ମିଳେ ଖୁବ୍ । ସମର ଖୁସି ହୁଅନ୍ତି । ତାକୁ ବି ଆତ୍ମ ସନ୍ତୋଷ ମିଳେ । ହେଲେ ଏବେକୁ ଆଉ ପାରୁନି ସେ । ସାହାଯ୍ୟ କରିବାକୁ ଯଦି ସୋମନାଥ ବାବୁଙ୍କ ଘରେ ଥିବା ପିଲାଟିପରି ପିଲାଟିଏ ପାଖରେ ଥାଆନ୍ତା, ହୁଏତ ତାକୁ ଏତେ କଷ୍ଟ ହେଉ ନଥାନ୍ତା ।



ମାତ୍ର ପଚାଶ ମିଟର ଦୂରରେ ସୋମନାଥ ବାବୁଙ୍କ ଘର । ସମରଙ୍କ ଅଫିସରେ କିରାଣୀ । ରାଜା ଘର ପରି ଚଳଣି । ତାଙ୍କ ଦରମା ତ ନିଶ୍ଚୟ ସମରଙ୍କ ଠାରୁ କମ ହୋଇଥିବ । ହେଲେ ଏଡ଼େ ବିଳାସରେ କିପରି ସେ ଚଳୁଛନ୍ତି ବୋଲି ସୁନିତା କେବେ ପ୍ରଶ୍ନ କଲେ କହନ୍ତି ବେକାର କଥା ଚିନ୍ତା କରନି । ସୋମନାଥ ବାବୁଙ୍କ ଘରେ କାମ କରୁଥିବା ପିଲାଙ୍କ ପରି ତାକୁ ଗୋଟିଏ ଛୋଟ ପିଲା ଯଦି ସମର ଯୋଗାଡ଼ କରିଦିଅନ୍ତେ ତେବେ ତା କଷ୍ଟ ଟିକେ ଲାଘବ ହୁଅନ୍ତା । ତାକୁ ନିଜ ପୁଅ ଝିଅଙ୍କ ପରି ରଖନ୍ତା ସେ । ଛୋଟ ମୋଟ କାମ ଟିକେ କରିଦେଲେ ବି ଟିକେ ଉଶ୍ଵାସିଆ ଲାଗନ୍ତା ତାକୁ । ସେ ଏଠିକୁ ଆସିଲା ଦିନଠୁ ଦେଖୁଛି ସୋମନାଥ ବାବୁଙ୍କ ସ୍ତ୍ରୀ କଡ଼ା କଥା କୁହନ୍ତି । କିଏ କୁହନ୍ତି ଚାକିରି କରେଇଦେବାର ଲୋଭ ଦେଖାଇ ପାଖ ଆଖର ଗରିବ ଘର ଛୁଆକୁ ଆଣି ବିନା ଦରମାରେ କାଳେ ଖଟାଉଛନ୍ତି ସୋମନାଥ ବାବୁ । ସତରେ ତାଙ୍କ ଘରେ ପିଲା ବଡ଼ ମିଶି ତିନି ଚାରିଜଣ ସବୁବେଳେ କାମ କରୁଥିବାର ଦେଖେ ସୁନିତା । ମନେ ମନେ ଭାବେ, ଯଦି ସମର କେବେ ତାକୁ ପିଲାଟିଏ କାମରେ ସାହାଯ୍ୟ କରିବାକୁ ଆଣିଦିଅନ୍ତେ ତ ସେ ପିଲାଟିକୁ ଖୁବ ଭଲରେ ରଖନ୍ତା । ଭିଡ଼ କାମ କରାନ୍ତା ନାହିଁ । ଛାଡ଼, ସମର ରୁଝିଲେ ସିନା ।

ମାଗଣାରେ କାମକରିବାକୁ ପିଲା ମିଳୁଥିବାରୁ ଗାଈ ଚାରୋଟି ସହ କୁକୁଡ଼ା ପଲେ ବି ରଖିଛନ୍ତି ସୋମନାଥ ବାବୁ । କ୍ଷୀର, ଦହି, ଘିଅ, ଅଣ୍ଡାରେ ସବୁବେଳେ ଘର ପୂରିଥାଏ ତାଙ୍କର । ବାଡ଼ି ବଗିଚାରେ ବି ରତୁ ଅନୁଯାୟୀ ପନିପରିବା ଢେଉଁ ହୁଏ । ସ୍ତ୍ରୀ ଲୋକର ମନ ନେଇ ସୁନିତା ବେଳେବେଳେ ଦୁଃଖ ହୁଏ । ଛୋଟ ପିଲାଟିଏ କାମ କରିବାକୁ ରଖିବା ପାଇଁ ଇଚ୍ଛା କରେ । ହେଲେ ସମରଙ୍କର ସେଇ ଏକା କଥା । ଛୋଟ ପିଲାଙ୍କୁ ଖଟେଇବା ଏକ ଦଣ୍ଡନୀୟ ଅପରାଧ । ପାପ ମଧ୍ୟ । ସେମାନଙ୍କୁ ନ ଖଟେଇ ବରଂ ସ୍ଵାବଲମ୍ବୀ କରିବା ଆମର କର୍ତ୍ତବ୍ୟ । ଯଦି ଆମେ ସେମାନଙ୍କ ପାଇଁ କିଛି ସୁବିଧା କରିପାରୁନେ ତ ସେମାନଙ୍କୁ ଅନ୍ତତଃ ଏକ୍ସପ୍ଲୁଏଟ କରିବା ଉଚିତ ନୁହେଁ । ସୁନିତା ରୂପ ହୋଇଯାଏ ସିନା ହେଲେ ମନ ଉଣା କରେ ।

ଏପରି ଭାବିବା ଭିତରେ ସନ୍ଧ୍ୟା ହୁଏ । ସମର ଅଫିସରୁ ଫେରନ୍ତି । ସୁନିତାର କଟିଯାଇଥିବା ହାତର ଅବସ୍ଥା ଦେଖି ଜୋର ଜବରଦସ୍ତି ସାଥରେ ନେଇ ଟଙ୍କାକଡ଼ ଦିଏଇଥାନ୍ତି । ଟିକିଏ ଗେଲ କରିଦେବାରୁ ସୁନିତାର ଅଭିମାନ କୁଆଡ଼େ ଚାଲିଯାଏ । ସ୍ଵାମୀ ସ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ଭିତରେ

ସମ୍ପର୍କ ଏମିତି । ମାନ ଅଭିମାନ ବେଶୀ ସମୟ ତିଷ୍ଠି ରହିପାରେନି । ଦିନ ଗଡ଼େ । ପିଲାଟିଏ ରଖିବାର ଇଚ୍ଛା ଆଉ ପୂର୍ଣ୍ଣ ହୋଇପାରେନି ସୁନିତାର ।....

ସେଦିନ ସମର ଅଫିସରୁ ଫେରି ଜୋତା ଖୋଲୁ ଖୋଲୁ ସୁନିତାକୁ ଚାହିଁ କହିଲେ ।

- ଜାଣିଲ ସୁନି, ସୋମନାଥ ବାବୁ ବଡ଼ ଅତୁଆରେ ପଢ଼ିଯାଇଛନ୍ତି । ଆରେଷ୍ଟ ହୋଇପାରନ୍ତି । ଚାକିରିରୁ ସସପେଣ୍ଡ୍ ହୋଇଗଲେ ଆଜି ।
- କଣ ? ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟ ହୋଇ ପଚାରିଲା ସୁନିତା ।
- ଛୋଟପିଲାଙ୍କୁ ଘରେ ରଖି ଖଟଉଛନ୍ତି ବୋଲି କିଛିଦିନ ତଳେ କିଏ ଜଣେ ସାକ୍ଷୀ ପ୍ରମାଣ ସହ ଅଭିଯୋଗ କରିଥିଲା । ବହୁତ ତନାଘନା ପରେ ଅଭିଯୋଗ ପ୍ରମାଣିତ ହୋଇଯିବାରୁ ତାଙ୍କୁ ଆଜି ଚାକିରିରୁ ବହିଷ୍କାର କରାଗଲା ।

- ହେ ଭଗବାନ, ମୁଁ ତ କିଛି ଜାଣିନି । ଏମିତି କଣ ହେଇଗଲା ! କ୍ଷଣିଏ ସ୍ତବ୍ଧ ହୋଇ ଗଲା ସୁନିତା ତାପରେ ପାଣି ଗିଲାସେ ଆଣି ସମରଙ୍କ ହାତକୁ ବଡ଼େଇ ଦଉ ଦଉ ଅନୁତପ୍ତ କଣ୍ଠରେ କହିଲା
- ସରି ସମର । ତୁମେ ସବୁବେଳେ ଠିକ୍ କଥା କୁହ । ଶିଶୁ ଶ୍ରମିକ ରଖିବା ଏକ ଅକ୍ଷମଣୀୟ ଅପରାଧ । ଏକ ପାପ । ମୁଁ ମୂର୍ଖ । ନ ବୁଝି ଯାହା ତମ ଉପରେ ଅଯଥାରେ ଅଭିମାନ କରେ । ପିଲାଟିଏ ହାତରେ କଲମ ନଧରାଇ ତା କୋମଳ ହାତରେ କାମ କରେଇବାର ଇଚ୍ଛା ରଖୁଥିଲି ମୁଁ । ଧିକ୍ ମୋତେ । ମୁଁ ମୋର ଭୁଲ ବୁଝିପାରିଛି । ଖୁବ ଶୀଘ୍ର ଅବସର ସମୟରେ ସ୍ଥାନୀୟ ଗରିବ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ମାଗଣାରେ ଶିକ୍ଷା ଦାନ କରିବି ବୋଲି ଭାବୁଛି । ଶିଶୁମାନେ ଆମ ଦେଶ, ଜାତିର ଭବିଷ୍ୟତ । ସେମାନଙ୍କୁ ଶ୍ରମିକ ନ କରି ସମର୍ଥ କରିବା ଆମ ସମସ୍ତଙ୍କର ପ୍ରଥମ କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ।

ମମତା ଆଚାର୍ଯ୍ୟ
ଦାମନଯୋଡ଼ି

ମା'

ମାଆ ପାଇଁ ପଦ୍ମଟିଏ (ମୋ ଲେଖନୀ ମୁନରୁ)

ଦୁନିଆର ସବୁଠୁ ସୁନ୍ଦର ଶବ୍ଦଟିଏ ମାଆ
ଯିଏ ସବୁବେଳେ ଉଦବେଗ ହୋଇ ଉଠିଥାଏ
ଶିଶୁର କୋମଳ ମୁଖରୁ ଶୁଣିବାକୁ
ଏଇ ଗୋଟିଏ ଶବ୍ଦ 'ମା' ।।
ଯାହାର କୋମଳ ସ୍ପର୍ଶରେ ଜୀବନ ହୋଇଉଠେ ସତେଜ ସୁନ୍ଦର ।
ମାଆର ସେଇ ଚିକକ ସ୍ନେହ ପାଇଁ ଶିଶୁ ବି ହୋଇ ଉଠେ ଆତୁର ।
ମାଆ ତ ସବୁ ସ୍ୱପ୍ନର ଗନ୍ତାଘର ସେଇଠୁ ତ ଆରମ୍ଭ ସବୁ ସମ୍ଭାବନାର
ମାଆ ବୋଲି ଡାକିଦେଲେ ଖେଳିଯାଏ ପ୍ରତିଧ୍ୱନି ପ୍ରତିଟି ଅଙ୍ଗରେ
ଏମିତି ଆନ୍ତରିକତା ଥାଏ ମାଆ ପରି ଏକ ସୁନ୍ଦର ଶବ୍ଦରେ ।
ତା ପ୍ରେମରେ ଥାଏ ଏତିକି ନିବିଡ଼ତା
ଅଙ୍କରେ ଗଣି ହେବନି ତା ସ୍ନେହର ଗଭୀରତା
ନିଜର ସବୁ ଦୁଃଖ ସୁଖ ଭୁଲି
ଲାଗିଯାଏ ଶିଶୁର ଲାଳନପାଳନରେ
ଜୀବନର ପ୍ରତିଟି ମୁହୂର୍ତ୍ତରେ ପ୍ରତିଟି କ୍ଷଣରେ ।
ନିଜର ଆଖିର ଲୁହକୁ ଲୁଚାଏ
ମନର କୋହକୁ ଛାତିରେ ଚପାଏ
କିନ୍ତୁ ମୋ ଆଖିର ଗୋପାଗୋପା ଲୁହକୁ
ପୋଛିଦିଏ ତା ପଶତ କାନିରେ ।
ସେ ଥାଏ ମୋ ନିଃସଙ୍ଗତାରେ
ସାଥ୍ ହୋଇ ରହିଥାଏ ଦୁଃଖରେ ସୁଖରେ ।
ଠିଆ ହୋଇ ରହିଥାଏ ଯେମିତି

ଦେବାଟିଏ ମୋ ପୃଷ୍ଠଭାଗରେ ।
'ମା' ସେ ସମସ୍ତ ସମ୍ପର୍କଠୁ
ନିବିଡ଼
ଜଳଠୁ ବି ସ୍ୱଚ୍ଛ,
ସାଗରଠୁ ବି ଗଭୀର
ପ୍ରେମର ଭଣ୍ଡାର
ସେ ହେଉଛି 'ମା' ।।
ଚଳନ୍ତି ପ୍ରତିମା ସେ ଏ ଧରିତ୍ରୀର
ଯାହାର ଆଶୀର୍ବାଦର ଥରେ ବାଜିଗଲେ
ଗୁଣ୍ଡୁଚି ମୁଷାର ଗାରପରି ରହିଯାଏ ଚିରକାଳ ।
ଦେଖେ ପୃଥିବୀପୃଷ୍ଠର ପ୍ରଥମ ଆଲୋକ ଯାହାପାଇଁ
ମନର ବେଦନା ବୁଝିଥାଏ ଯିଏ କିଛି ନ କହି ।
'ମା' ଆଣିଥାଏ ଜୀବନରେ ସବୁବେଳେ
ଆଲୋକର ଅସୁମାରି ଫୁଆର ।
'ମା'ର ସ୍ନେହର ପରଶ ଲାଗେ
ଯେମିତିକି ଏକ ଅମୃତର ଧାରା ।
ପୃଥିବୀଠୁ ମହାକାଶ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଜ୍ଞାନର ସମ୍ବୋଧନ
ଯେଉଁ ଶବ୍ଦର କୌଣସି ତୁଳନା ନାହିଁ
ସେ ହେଉଛି 'ମା'



ଶିଖା ନାୟକ
ଭୁବନେଶ୍ୱର

ରଜ

ରଜ ଆସୁଛି । ପିଲାମାନେ ଗାଁକୁ ଆସିବେ ରଜ ପାଳନ କରିବାକୁ । ବଡ଼ବୋଉଙ୍କ ପାଦ ତଳେ ଲାଗୁନି । କୋଉଠୁ ଆରମ୍ଭ କରିବେ ଭାବୁଛନ୍ତି । ଆଜି ସଜବାଜ । ବେବି ତା'ର ସ୍ଵାମୀ ଆଉ ପିଲା ଦୁଇଜଣ ଆସିଗଲେଣି । ସଞ୍ଜବେଳକୁ କୁନି, ତାର ବର ଆଉ ପିଲାମାନେ ଆସି ପହଞ୍ଚିଯିବେ ।

ବଡ଼ବୋଉ ହୋଇ ଯାଇ ନିମ୍ନ ଆଉ କରଞ୍ଜ ଦାନ୍ତକାଠି କାଟି ଆଣିଲେ । ଆଉ ରଜ ତିନିଦିନ କିଛି କଟା ହେବନି ଯେ । ପିଲେ ଘରକୁ ଆସିଲେ ଦାନ୍ତକାଠିରେ ଘସିବାକୁ ଭଲ ପାଆନ୍ତି ପରା । ଯେତେ ବାହାରେ ରହିଲେ ବି ଦାନ୍ତକାଠିରେ ଦାନ୍ତ ଘସିଲେ ଦାନ୍ତ ଆଉ ମାଢ଼ିରେ କିଛି ରୋଗ ହୁଏନି ବୋଲି ପିଲାଙ୍କର ବିଶ୍ଵାସ । ଭାଇ କହିଲେ ଲକ୍ଷନ ବି ପୋଛାପୋଛି କରି ରଖିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ଯଦି ଲାଜନ୍ତୁ ଯିବ ଦରକାର ହେବ । ଗାଁରେ ତ ଜନଭର୍ତ୍ତର ସୁବିଧା ନାହିଁ । ତେଣୁ ଲାଜନ୍ତୁ ଗଲେ ଲକ୍ଷନ ଜଳେଇ ଚଳିବାକୁ ହୁଏ । ସଜବାଜ ଦିନଠାରୁ ବିରିଚାଉଳ ବତୁରାଇ ଶିଳରେ ବାଟିବାକୁ ବଡ଼ବୋଉ ଲାଗିପଡ଼ିଲେ । କହିଲେ ଶିଳରେ ବାଟିଲେ ପୋଡ଼ପିଠା ଖୁବ୍ ସ୍ଵାଦିଷ୍ଟ ହେବ । ରାତିରେ ଚୁଲିରେ ନଡ଼ିଆ, ଛେନା ପୁର ଦେଇ ପୋଡ଼ପିଠା ବସିଲା । ତା ସାଙ୍ଗକୁ ଆମ୍ବୁଲ ରାଇ ତିଆରି ହେଲା ।

ଭୋରରୁ ସମସ୍ତେ ହଳଦୀ ଲଗେଇ ନଈରେ ଗାଧୋଇ ଆସିଲୁ । ଗାଁକୁ ଗଲେ ନଈରେ ଗାଧୋଇବାକୁ ଆମେ କେହି ଭୁଲି ନ ଥାଉ । ସଜବାଜ ହୋଇ ନୁଆନୁଆ ଲୁଗାପଟା ପିନ୍ଧି ପିଠା ଖାଇବାକୁ ବସିଗଲୁ । ସତରେ ପିଠା ସହିତ ଆମ୍ବୁଲରାଜର ସ୍ଵାଦ ନିଆରା ଥିଲା । ଅନେକ ଦିନ ପରେ ଗାଁକୁ ଯାଇଥିବାରୁ ବେବି, କୁନି ଆଉ ପିଲାମାନେ ବନ୍ଧୁ, ବାନ୍ଧବଙ୍କ ଘରକୁ ବୁଲିବାକୁ ଗଲେ । ସବୁରି ଘରେ ପିଠାପଟା ଖାଇ ଗପସପ କରି ଦିନଟି କଟିଗଲା । ସନ୍ଧ୍ୟାବେଳକୁ ଭାଉଜ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ସଜ କରିଦେଲେ । ଆୟତୋଟାରେ ରଜଦୋଳି ଲାଗିଥାଏ । ପିଲାମାନେ ଦୋଳି ଖେଳିବାରେ ଲାଗିପଡ଼ିଲେ । ଖାଲି ପିଲାମାନେ କାହିଁକି ବଡ଼ମାନେ ବି ଲମ୍ବା ଓ ବଡ଼ ଦୋଳିରେ ବସି ଝୁଲିଲେ । ବଡ଼ ଦୋଳିରେ ବସି ଜୋର୍ରେ ଝୁଲିବା ବେଳେ ଡର ଲାଗୁଥାଏ । ବେବି ଓ କୁନିଙ୍କୁ ଭାଉଜ ସାହସ ଦେଉଥାନ୍ତି ଓ କହୁଥାନ୍ତି ତୁମେ ଏଇ ଗାଁର ଝିଅ ହୋଇ ଡରିଲେ ହେବ ? ଆଗରୁ ତ କେତେ ଦୋଳି ଖେଳିଛ ।

ଏମିତି ମଜାରେ ପହିଲି ରଜ କଟିଗଲା ।

ରଜ ସଂକ୍ରାନ୍ତି ଦିନ ବି ମଣ୍ଡା, କାକରା ପିଠା ସାଙ୍ଗକୁ ଆମ୍ବ, ପଣସ ଖାଇ ସମସ୍ତେ ଖେଳିବାକୁ ବସିଗଲେ । ଗାଁରେ ସମସ୍ତେ ତାସ୍, ଲୁତୁର ଆସର ଜମେଇ ବସିଥାନ୍ତି । ମଝିରେ ମଝିରେ ଚା, ଜଳଖିଆ ଯୋଗାଇ ଦିଆଯାଉଥାଏ । ସନ୍ଧ୍ୟାବେଳକୁ ଗାଁ ନଈବାଲିରେ ବାଗୁଡ଼ି ଖେଳ ଦେଖିବାକୁ ସମସ୍ତେ ଗଲେ । ନଈବାଲିରେ ଆଖପାଖ ଗାଁର ପିଲାମାନେ ବାଗୁଡ଼ି ଖେଳୁଥାଆନ୍ତି । ନଈର ଆରପଟ କୂଳରେ ବସି ସ୍ତ୍ରୀଲୋକ ଓ ପିଲାମାନେ ଖେଳ ଦେଖୁଥାଆନ୍ତି । ହାର ଜିତ୍ ଖେଳ ତିନିଦିନ ଧରି ଚାଲିଲା । ଶେଷ ରଜଦିନ ଜିତିଥିବା ଦଳ ପୁରସ୍କାର ପାଇଲେ ।

ଶେଷରଜଦିନ ମାଂସ ତରକାରୀ ସହ ପିଠା ଖାଇବାକୁ ସମସ୍ତେ ଚାହିଁ ରହିଥିଲେ । କାଠଚୁଲିରେ ପୁଣି ବଡ଼ବୋଉଙ୍କ ହାତରନ୍ଧା ମାଂସ ତରକାରୀ ବହୁତ ସ୍ଵାଦିଷ୍ଟ ଥିଲା । ବଡ଼ବୋଉଙ୍କ ପାନସଜ ତ ଥିଲା । ଭାଇ ଆମ ପାଇଁ ମିଠା ମସଲା ନେଇ ଆସିଲେ, ରଜ ତିନିଦିନ ବଡ଼ବୋଉ ଓ ଭାଉଜ ଆମ ପାଇଁ ମିଠାପାନ ତିଆରି କରି ଦିଅନ୍ତି ।

ରଜ ତିନିଦିନ ବହୁତ ହସଖୁସିରେ କଟିଗଲା । ତା ପରଦିନ ବସୁମତି ଗାଧୁଆ ହେଲା । ପୃଥ୍ଵୀ ମାତାଙ୍କୁ ବଡ଼ବୋଉ ହଳଦୀ ଲଗେଇ ଗାଧୋଇ ଦେଲେ । ଲଙ୍ଗଳ, ଦାଆ ସବୁ ଜିନିଷ ସଜା ହୋଇ ରଖାଯାଇ ପୂଜା କରାଗଲା ।

ରଜପର୍ବଟି ସରି ଯାଇଥିବାରୁ ସବୁରି ମନଦୁଃଖ ହେଉଥାଏ । ସମସ୍ତେ ବହୁତ ସୁନ୍ଦର ସ୍ମୃତି ନେଇ ନିଜ ନିଜ ଘରକୁ ଚାଲିଗଲେ । ଭାଇ ଲାଗିପଡ଼ିଲେ ଧାନ ରୁଆ କାମରେ । ସମସ୍ତଙ୍କର ଚିରାଚରିତ ରୁଚିନ୍ ବନ୍ଧା ଜୀବନ ଆରମ୍ଭ ହୋଇଗଲା ।

ସାମା ମିଶ୍ର
ଦାମନଯୋଡ଼ି



ମାତୃ ଦିବସ

ଇଶ୍ଵରଙ୍କ ଅନବଦ୍ୟ ସୃଷ୍ଟି ମା' । ମା ଏକ ମଧୁର ନାମ । ଆମେ ପିଲାଦିନୁ ଶୁଣି ଆସୁଛେ ମାତୃ ଦେବଭବ । ପିତୃ ଦେବ ଭବ । ଉଭୟଙ୍କୁ ଆମେ ତାଙ୍କୁ ଦେବତା ତୁଲ୍ୟ ପୂଜି ଆସୁଛୁ । କୁହାଯାଏ ସବୁସ୍ଥାନରେ, ସବୁ ସମୟରେ ଇଶ୍ଵରଙ୍କର ସାକ୍ଷାତକାର ସମ୍ଭବ ହେଉ ନଥବାରୁ ଇଶ୍ଵର ଅମୃତମୟୀ ମା'ଙ୍କୁ ସୃଷ୍ଟି କରିଛନ୍ତି । ଏହି ନାମର ଉଚ୍ଚାରଣ ଓ ଶ୍ରବଣରେ ପ୍ରାଣ ହୁଏ ପୁଲକିତ, ରୋମାଞ୍ଚିତ । ମା'ର ଆଶ୍ଵାସନା ଓ କର ସ୍ଵର୍ଗରେ ଦୂର ହୁଏ ସନ୍ତାନର ବ୍ୟଥା ଓ ବେଦନା । ଶରୀରରେ ଖେଳିଯାଏ ଶାନ୍ତି ଶୀତଳତାର ଗଙ୍ଗାଧାର । ମା'ଙ୍କୁ ହିଁ

ପ୍ରଥମ ସ୍ଥାନ ଦିଆଯାଇଛି ଶିଶୁକୁ ମଣିଷ ପରି ମଣିଷଟିଏ କରିବା ପାଇଁ । ମା'ର ଭୂମିକା ଅତି ଗୁରୁତ୍ଵପୂର୍ଣ୍ଣ । ତାର ତ୍ୟାଗ ଓ ସେବା ନିକଟରେ ସମସ୍ତ ମହାର୍ଘି ବସୁ ତୁଚ୍ଛ ଅଟେ । ମା'ର ମହତ୍ଵକୁ ବୁଝିବା ପାଇଁ ସମୟର ଅବଧି ନାହିଁ ତଥାପି



ଅନ୍ତର୍ଜାତୀୟ ସ୍ତରରେ ପ୍ରତିବର୍ଷ ମେ' ମାସର ଦ୍ୱିତୀୟ ରବିବାରରେ ପାଳିତ ହେଉଛି ବିଶ୍ୱ ମାତୃଦିବସ ।

ମା' ସର୍ବତ୍ର, ସର୍ବଦା ପୂଜନୀୟା ଓ ନମସ୍ୟା । ଦେବଭୂମି ଭାରତବର୍ଷରେ ବେଦ, ଉପନିଷଦ, ପୁରାଣ, ଧର୍ମଶାସ୍ତ୍ର ଓ ବିଭିନ୍ନ ଗ୍ରନ୍ଥରେ ମାତୃ ମହିମା ବର୍ଣ୍ଣିତ । ଆଧୁନିକ ମାତୃଦିବସ ପାଳନ ପାଶ୍ଚାତ୍ୟ ରାଷ୍ଟ୍ରରୁ ଆସିଛି । ଆମ ଦେଶରେ ମଧ୍ୟ ଏହା ପାଳନ କରାଯାଉଛି ।

ମା' ଶକ୍ତି ସ୍ତୂତ ହେଲେ ମଧ୍ୟ ଏହାର ଅର୍ଥ ଅତି ବ୍ୟାପକ । ନାରୀ ଜୀବନର ସାର୍ଥକତା ହିଁ ତାର ମାତୃତ୍ୱରେ ହିଁ ପର୍ଯ୍ୟବସିତ । କୁହାଯାଏ ମା' ତାର ଗର୍ଭରେ ଦଶମାସ ଦଶଦିନ ଧାରଣ କରି ଏକ ନୂତନ ସୃଷ୍ଟିକୁ ସଂସାରକୁ ଆଣେ । ମା'ର ସାହାରା, ପରିଚର୍ଯ୍ୟା ଓ ପୋଷଣରେ ଶିଶୁ ବଡ଼ ହୁଏ । ମା' ଜୀବନ ସଂଗ୍ରାମରେ ଭାଙ୍ଗି ନପଡ଼ି ସବୁ ଦୁଃଖ କଷ୍ଟକୁ ମଥାପାତି ସହି ନିଏ । ଶିଶୁ ସହ ତାର ଥାଏ ଏକ ନିବିଡ଼ ଓ ନୀରବ ସମ୍ପର୍କ । ଶିଶୁ ମନକୁ ବୁଝିପାରି ତାରି ସେବାରେ ମା' ନିଜକୁ ହଜେଇ ଦିଏ । ଏଇ ଅସୀମ, ଅଚିନ୍ତନୀୟ ତ୍ୟାଗ ପାଇଁ ମା' ହେବାର ସମ୍ମାନ ପାଏ । ମମତାମୟୀ, ସର୍ବସହା ସେ । କବିଙ୍କ ଭାଷାରେ “ଆକାଶ ହିଁ ବଡ଼ ପିତା, ମାତା ବଡ଼ ପୃଥିବୀ ଅପେକ୍ଷା” ।

ମା'ର ଆନ୍ତରିକତାରେ ଭଲପାଇବାରେ ବା ସଂବେଦନଶୀଳତାରେ ଉଣା-ଅଧିକ ନଥାଏ । ମା' ସୁଖରେ ଦୁଃଖରେ, ଭାବରେ ଅଭାବରେ ପ୍ରାର୍ଥନାରେ ଦାରିଦ୍ର୍ୟରେ ଅଥବା ଭଲରେ ବା ମନ୍ଦରେ ମାତୃତ୍ୱକୁ କ୍ଷୁଣ୍ଣ କରି ନଥାଏ । ସେହି ମାଆ ହୋଇ ରହିଥାଏ । ବ୍ୟାଧି ପାଡ଼ିତ ସନ୍ତାନ ପାଇଁ ସେ ଦିନ ରାତି ଏକାକାର କରିଦିଏ । ଠାକୁରଙ୍କ ପାଖରେ ମଥା ପିଟେ । କେତେ ମାନସିକ କରେ, ତାହା ସେ ହିଁ କେବଳ ଜାଣେ । ଜନ୍ମ ଜନ୍ମାନ୍ତରେ ମା' ରଣ ଅଶୁଣା । ସନ୍ତାନର କଲ୍ୟାଣ ପାଇଁ ସେ ସଞ୍ଜସଲିତା ପରି ଜଳିଯାଏ । ଶିଶୁର ସ୍ୱାର୍ଥରକ୍ଷା ପାଇଁ ସେ କଷ୍ଟକୁ

ମଥାପାତି ସହିବା ପାଇଁ ପଶ୍ଚାତ୍ତପଦ ହୁଏନାହିଁ । ଶତ୍ରୁ ସହିତ ଲଢ଼ିବାକୁ ଆଗେଇ ଆସେ ।

ଆଜି ଏକବିଂଶ ଶତାବ୍ଦୀରେ ମା' ମାନେ ଅଶିକ୍ଷିତ ନୁହନ୍ତି, ଆଧୁନିକ ଶିକ୍ଷା, ସଭ୍ୟତା ଓ ବୈଜ୍ଞାନିକ ଦୃଷ୍ଟିଭଙ୍ଗି ସେମାନଙ୍କଠାରେ ପରିଲକ୍ଷିତ ହୁଏ । ନିଜେ ପରିବର୍ତ୍ତିତ ହେବା ସହିତ ସନ୍ତାନମାନଙ୍କୁ ପରିବର୍ତ୍ତିତ ହେଉଥିବା ପରିସ୍ଥିତିରେ ଗଢ଼ି ତୋଳିବା ପାଇଁ ସେମାନେ ଅହରହ ଚପୁର । ସଂପ୍ରତି ମା' ମାନେ ଉଚ୍ଚଶିକ୍ଷିତ, ଆତ୍ମନିର୍ଭର ଶୀତଳା ଓ ଉଚ୍ଚପଦ ପଦବୀରେ ନିଜର ଦକ୍ଷତା ପ୍ରଦର୍ଶନ କଲେଣି । କିନ୍ତୁ ପରିଣତ ବୟସରେ ବୃଦ୍ଧାଶ୍ରମରେ ପିତାମାତାଙ୍କୁ ଛାଡ଼ିଦେବା ଆଜି ଏକ ଚିନ୍ତାର ବିଷୟ । ମା' ହେଉଛି ବାପା ହେଉ ସେମାନଙ୍କର ତ୍ୟାଗ ଓ ଅବଦାନକୁ ଭୁଲିଯିବା ସନ୍ତାନମାନଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଅପରାଧ । ଏହି ପ୍ରସଙ୍ଗରେ ଆଦି ଶଙ୍କରାଚାର୍ଯ୍ୟଙ୍କର କଥାଟି ସ୍ମରଣକୁ ଆସେ । ସଂସାରରେ କୁପୁତ୍ର ଜନ୍ମ ହୋଇପାରେ । ମାତ୍ର କୁମାତା କେବେହେଲେ ଜନ୍ମ ହୋଇ ପାରେ ନାହିଁ । ତେଣୁ ମାତା ଚିର ପୂଜନୀୟା । ସୀମାହିନ ମମତାର ପରିଭାଷା ମା', ତ୍ୟାଗ, ତିତିକ୍ଷା-ତପସ୍ୟା, ସ୍ନେହ ଶୃଙ୍ଖା, ଦୟାକ୍ଷମା, ମମତା ଓ ବଳିଦାନର କମନାୟ ଜୀବନ ପ୍ରତିମୂର୍ତ୍ତି ହେଉଛି ମା' । ଗୋଟିଏ ଦିନ ମାତୃଦିବସ ପାଳନ ଯଥେଷ୍ଟ ନୁହେଁ । ସବୁଦିନ ମାତୃଦିବସ ପାଳନ ସନ୍ତାନର କର୍ତ୍ତବ୍ୟ । ତା'ର ଅବଦାନ ଓ ଉପକାର ଆମେ କଦାପି ଭୁଲିଯିବା ନାହିଁ । ତାର ମନର ଗଭୀରତାକୁ ଆମେ ସମସ୍ତେ ବୁଝିବା ଓ ତାକୁ ଭଲ ପାଇବା । ଚିକିତ୍ସ ସ୍ନେହ ଆମଠୁ ପାଇଲେ ସେ ଖୁସିରେ ଅଜସ୍ର ସ୍ନେହ ଅଜାଡ଼ି ଦେବ । ମା' ନାମର ପ୍ରକୃତ ମୂଲ୍ୟକୁ ଆମେ ମର୍ମେ ମର୍ମେ ବୁଝିବା ଓ ସମ୍ମାନ ଦେବା ଆବଶ୍ୟକ । ତେବେ ଯାଇ ଆମେ ଦୁନିଆରେ ଜଣେ ଜଣେ ସୁନାଗରିକ ହୋଇପାରିବା ।

ମମତା ରାଉତ
ଅନୁଗୁଳ

ମାତୃଦିବସ

ଧରାପୃଷ୍ଠର ସୁନ୍ଦର ସୁସଜ୍ଜିତ ରୂପର ପରିପୂର୍ଣ୍ଣତାର ପରିପ୍ରକାଶ ମାତା ରୂପର ମାତୃତ୍ୱର କଣ କେମିତି ବର୍ଣ୍ଣନା କରି ଶବ୍ଦର ଆକାରରେ ଅର୍ଥରେ ପରିକଳ୍ପିତ କରିହୁଏ ? ମାତୃଦିବସମାନେ ବର୍ଷର ଗୋଟିଏ ଦିନକୁ ଗଣନା କରିବା ଅକଳନୀୟ । ପ୍ରତ୍ୟେକ ଦିନ ପ୍ରତ୍ୟେକ ମୁହୂର୍ତ୍ତ ହିଁ ମାଆର ସଜ୍ଞାକୁ ବୁଝାଏ । ସାରା ଜୀବନ ସ୍ମରଣ ପରିଷ୍କୃତ ହୁଏ ମାଆ ଆକ୍ଷରିକ ଶବ୍ଦର ଅର୍ଥ କୋଣ ଅନୁକୋଣରେ । ଜୀବନ ସରସ ସୁନ୍ଦର ହୁଏ ମାତୃତ୍ୱର ସ୍ୱର୍ଣ୍ଣରେ । ଅଜସ୍ର ସୋପାନ ଗଢ଼ି ତୋଳିବାର ଅଦମ୍ୟ ସାହସ ଭରିଦିଏ ମନ ଆଉ ପ୍ରାଣରେ... । ଅକୁହା କଥାର ଅକୁହା ବେଦନା ବୁଝେ ଯେଉଁ ଆଖି, ମନ ଶବ୍ଦ ରୂପରେ ଆକ୍ଷରିକ ରୂପ ମାଆ ନାମେ ବିଦ୍ୟମାନ ।

ମାତୃ ଦିବସେ ବୁଝିବାକି ଆମେ ମାତୃତ୍ୱର ପରିଭାଷା । ଦିନଟିଏ ପାଳି କରି ପାରିବାକି ଅଗଣିତ ନୀରବତା । ମହନୀୟତାର ଚିର ସ୍ୱର୍ଣ୍ଣରୁ ଆବିର୍ଭୂତ ମା । ମାତୃ ରୂପକ ଭାଷାର ସ୍ୱରୂପ ଚିଏ ଅମୂଲ୍ୟତାର ପ୍ରତିବିମ୍ବ ରେଖା ରୂପ ନୀରବେ ଆକଳନ କରି ହୁଏ ନାହିଁ ତା ମୂଲ୍ୟ ମାଆ ପରା ସିଏ ଚିର ନମସ୍ୟ ସୃଷ୍ଟି ନିୟନ୍ତ୍ରା ସମକକ୍ଷେ ସେ ଯେ ଅନ୍ତରରେ ପାଏ ସ୍ଥାନ ।



ଜୟଶ୍ରୀ ଡାକ୍ତରୀ
ଅନୁଗୁଳ

TOUCHING LIVES

भुवनेश्वर

भुवनेश्वर 'नालको महिला समिति' समाज सेवा में अग्रसर रहती है। इसी तरह अनुगुळ व दामनजोड़ी की नालको महिला समितियाँ भी आवास के समीपवर्ती इलाकों में सक्रीयता से समाज सेवा प्रदान करती हैं। इन सभी के सदप्रयास का उद्देश्य सभी समुदाय के प्रत्येक आयु वर्ग तक लाभ पहुँचाना है। यहाँ नालको महिला समिति के सदप्रयास की कुछ झलकियाँ प्रस्तुत की गई हैं।



आयोजित 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' समारोह की झलकियाँ



'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' के अवसर पर संगिनी 'जनवरी-मार्च 2022' अंक का विमोचन



'फैमली नं 1' के विजेता को पुरस्कार प्रदान करती हुई अध्यक्ष, नालको महिला समिति



'होली समारोह'



अगरबत्ती बनाने के मशीन का सुपुर्दगी समारोह



गुलाब बाग का उद्घाटन



आयोजित 'उत्कल दिवस' समारोह में अध्यक्ष, नालको महिला समिति का स्वागत

अनुगुळ



नालको महिला समिति, अनुगुळ द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह



नालको महिला समिति, अनुगुळ द्वारा आयोजित उत्कल दिवस समारोह



नालको महिला समिति, अनुगुळ द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह

दामनजोड़ी



गरीबी रेखा से नीचे के परिवार के बच्चों के साथ होली समारोह



आयोजित अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह



उपाध्यक्षा, श्रीमती सुजाता पटनायक का विदाई समारोह

Readers are requested to send their write ups, suggestions and feedback to nmssangini@gmail.com in clear handwriting or soft copy before 15th July 2022 - Editor-in-Chief

नालको  **NALCO**
National Aluminium Company Limited

Born in ODISHA..
Grown in ODISHA..
Globally Represents ODISHA...



No. 1
Lowest
Cost Producer
of **Alumina**
in World

No. 1
Lowest
Cost Producer
of **Bauxite**
in World

2nd
Highest
Net Foreign Exchange
Earning **CPSE**
in the Country

NALCO

THE INDUSTRIAL KONARK OF ODISHA